स्वर्ण जयंती
2014 ई.

महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय खरसिया

जिला- रायगढ़ (छ.ग.)

शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
कर्मण्ये वधिकारस्ते
खरसिया (रायगढ़)

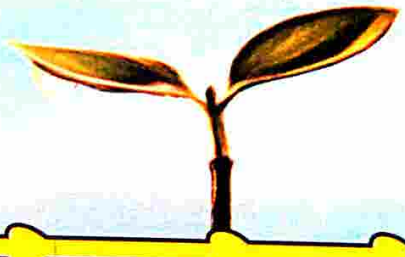

सृजन

mail ID : mggovtcollegekhs@gmail.com Phone No. : 07762-272148

छात्र संघ शपथ ग्रहण समारोह के माननीय अतिथि

माननीय गृहमंत्री के साथ छात्र-छात्राएं

छात्र संघ शपथ ग्रहण समारोह के सम्माननीय दर्शक

महाविद्यालयीन प्रांगण में वृक्षारोपण करते प्राध्यापक

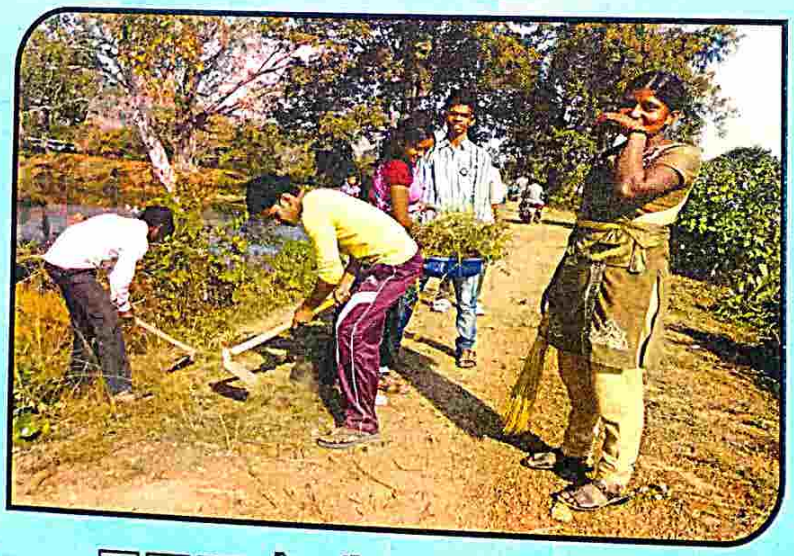

एन.एस.एस. कैम्प में सफाई करते स्वयंसेवक

एन.एस.एस. कैम्प में रैली निकालते हुए स्वयंसेवक

सर्वजनाय, स्वदेश हिताय, संदेश वाहक, सत्यानुगामी, सरल–सहज भाष्य, सद्भावनापूर्ण, सम्प्रदाय मुक्त, सृजनात्मकता के साथ, सृजनशील, संस्कारित, सांगीतिक, सुस्पष्ट, संवेदनामय, सक्रिय, स्वर्ण–जयंती विशेषांक, समकालीन, साहित्यिक, स्तरीय, सकारात्मक सोच के शब्दपूंज

सृजन

सत्र – 2014–15

संपादक
डॉ. रमेश टण्डन

प्रधान संपादक
डॉ. श्रीमती रविन्द्र चौबे

संरक्षक एवं प्राचार्य
डॉ. पी. सी. घृतलहरे

प्रकाशक©

महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, खरसिया
जिला– रायगढ़ (छ.ग.)

मुद्रक : समूह ऑफसेट प्रिन्टर्स, खरसिया

श्याम यादव
SHYAM YADAV

सत्यमेव जयते

अतिरिक्त निज सचिव
इस्पात, खनन, श्रम एवं रोजगार
राज्य मंत्री
भारत सरकार
श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली–110001
ADDITIONAL PRIVATE SECRETARY
MINISTER OF STATE FOR STEEL,
MINES, LABOUR & EMPLOYMENT
GOVERNMENT OG INDIA
SHRAM SHAKTI BHAWAN,
NEW DELHI-110001

महात्मा गांधी शासकीय महाविद्यालय, खरसिया द्वारा प्रकाशित सृजन पत्रिका की स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में मेरी ढ़ेर सारी शुभकामनाएं अर्पित करते हुए ये आशा करता हूँ कि इस पत्रिका में उल्लेखित विषयों से आज के युवा वर्ग को एक नई दिशा मिलेगी, जिससे व्याप्त दुषित वातावरण से युवा अपने आपको हमेशा दूर रखकर देशहित के वातावरण में हमेशा अग्रणी रहेगा ।

महाविद्यालय परिवार में पत्रिका के प्रकाशन को मेरी ओर से बधाई ।

विष्णुदेव साय
केन्द्रीय मंत्री,
इस्पात खनन, भारत सरकार,
नई दिल्ली

103, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi- 110119
Phone : 23325635, 23708179 TeleFax : 23730322

प्रेम प्रकाश पाण्डेय
मंत्री
राजस्व एवं आपदा प्रबंधन, पुनर्वास,
उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं
जनशक्ति नियोजन, विज्ञान एवं
प्रौद्योगिकी विभाग, छत्तीसगढ़ शासन

फोन (मंत्रालय) : 0771-2510321, 2221321
निवास : बी-1, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.)
फोन (नि.) : 0771-2446440
निवास : सेक्टर - 9, सड़क नं. -11, बंगला नंबर - 1, भिलाई
फोन : 0788-2242590

क्रमांक ..... मंत्री/रा.आ.प्र.उ.शि.त.शि.ज.नि.वि.प्रौ.

रायपुर, दिनांक 07/1/15

// संदेश //

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है, कि महात्मा गांधी शासकीय महाविद्यालय, खरसिया सत्र 2014–15 में "स्वर्ण जंयती" वर्ष का गरिमामय आयोजन करने जा रहा है। इस अवसर पर महाविद्यालय द्वारा पत्रिका "सृजन" का प्रकाशन किया जा रहा है। महाविद्यालयीन पत्रिका विद्यार्थियों की बौद्धिक–रचनात्मक गतिविधियों तथा साहित्यिक अभिरूचि को संबोधित करने का सशक्त माध्यम होती है। आशा है कि पत्रिका के माध्यम से छात्र–छात्राओं को सकारात्मक विचारों के साथ अपनी प्रतिभाओं को व्यक्त करने का सुअवसर प्राप्त होगा।

महाविद्यालय के स्वर्ण जंयती के इस शुभ अवसर पर प्रकाशित पत्रिका की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(प्रेम प्रकाश पाण्डेय)

प्रति,
प्राचार्य,
एम.जी. शासकीय महाविद्यालय,
खरसिया, जिला –रायगढ़

E:\HE MINISTER-Ami\Sandesh.doc

उमेश पटेल
विधायक
विधानसभा क्षेत्र क्र.-18
खरसिया

मु.पो. - नंदेली (खरसिया)
तह. व जिला - रायगढ़ (छ.ग.)
मोबा. : 9407700000
फोन : 07762-271571
फैक्स : 07762-271631
ई-मेल : umesh.nkpatel@gmail.com

क्रमांक : .....Q.....

दिनांक : 18-12-2014

शुभकामना संदेश

यह जानकार अत्यंत प्रसन्नता हुई कि खरसिया में 1964 से स्थापित महात्मा गांधी शास.महाविद्यालय इस वर्ष अपनी स्वर्ण जयंती वर्ष मनाते हुए वार्षिक पत्रिका 'सृजन' का प्रकाशन करने जा रहा है।

महाविद्यालय अपनी शिक्षा संस्कार व सामाजिक संचेतना के अहम व्यक्तित्व को कुशलतापूर्वक निर्वहन करते हुए 50 वर्षों की सुदीर्घ अवधि में अंचल के प्रतिभाओं को तराश कर नई दिशा देने उन्हें राष्ट्र के लिये योग्य व समर्पित नागरिक बनाने में व्यक्तित्व निर्माण का स्रोत केन्द्र बनाकर उच्च शिक्षा के लिये प्रकाश स्तम्भ की तरह आलोकित पथ प्रदर्शित करने में सफल रहा है।

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'सृजन' अपने नाम के अनुरूप साहित्य प्रेमियों, शिक्षा व कला साधकों, रचनाधर्मियों का सृजनात्मक क्षमता को पुष्पित पल्लवित करने में सफल होगी।

इन्हीं पवित्र भावनाओं के साथ हार्दिक शुभकामना ...

(उमेश नंदकुमार पटेल)

प्रति,

प्राचार्य,
महात्मा गांधी शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खरसिया
जिला रायगढ़ (छ.ग.)

निवास : डी-1/2, शासकीय आवासीय परिसर, देवेन्द्र नगर, रायपुर -492001, फोन/फैक्स : 0771-2881030

गिरधर गुप्ता
पूर्व अध्यक्ष, खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड,
छ.ग. शासन

खरसिया
जिला–रायगढ़ (छ.ग.)
पिन–496661

शुभकामना संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि एम.जी. शासकीय महाविद्यालय, खरसिया अपनी स्थापना की स्वर्ण–जयंती के अवसर पर पत्रिका ''सृजन'' का प्रकाशन कर रहा है ।

मैं इस अवसर पर समस्त महाविद्यालयीन स्टॉफ व छात्रों को शुभकामनाएँ देता हूँ ।

(गिरधर गुप्ता)

कमल गर्ग
अध्यक्ष,
नगरपालिका परिषद, खरसिया
जिला– रायगढ़ (छ.ग.)

शुभकामना संदेश

यह वर्ष महात्मा गांधी शासकीय महाविद्यालय का स्वर्ण–जयंती स्थापना का वर्ष है । महाविद्यालय के गौरवपूर्ण 50 वर्ष होने पर अत्यंत हर्षित एवं गौरवान्वित हूँ कि मैं भी इस महाविद्यालय का छात्र रहा हूँ । ऐसी अपेक्षा है कि पत्रिका ''सृजन'' के माध्यम से छात्रों को समाज के सकारात्मक कार्यों के प्रति रूझान हो, इसी शुभकामनाओं के साथ समस्त महाविद्यालयीन सटॉफ व छात्रों को हृदय से बधाई देता हूँ ।

(कमल गर्ग)

श्रीचंद रावलानी
डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी मार्ग, खरसिया
जिला– रायगढ़ (छ.ग.)
मो. 98267–02302

शुभकामना संदेश

महात्मा गांधी शासकीय महाविद्यालय, खरसिया जिला– रायगढ़ (छ.ग) द्वारा प्रकाशित ''सृजन'' पत्रिका के स्वर्ण–जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में मेरी ओर से करोड़ों शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ । मैं यह आशा करता हूँ कि ''सृजन'' पत्रिका छात्र–छात्राओं को एक नई दिशा प्रदान करे जिससे उनमें देश–प्रेम की भावना जागृत हो ।

स्वर्ण–जयंती के शुभ अवसर पर पत्रिका के प्रकाशन की महाविद्यालय परिवार को ढेर सारी बधाईयां ।

(श्रीचंद रावलानी)

धनसाय यादव
अध्यक्ष, जनभागीदारी समिति
महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, खरसिया
जिला– रायगढ़ (छ.ग.)

शुभकामना संदेश

अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि महात्मा गांधी शासकीय महाविद्यालय, खरसिया जिला– रायगढ़ (छ.ग) अपनी स्थापना की स्वर्ण–जयंती के अवसर पर पत्रिका ''सृजन'' प्रकाशित कर रहा है । इसमें सभी छात्र–छात्राओं की भागीदारी होगी एवं उनका व्यक्तित्व सामने आयेगा ।

मैं इस अवसर पर समस्त महाविद्यालयीन स्टॉफ व छात्रों को बधाई देता हूँ ।

(धनसाय यादव)

अनुविभागीय अधिकारी (रा.)
खरसिया,
जिला– रायगढ़ (छ.ग.)

शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि महात्मा गांधी शासकीय महाविद्यालय, खरसिया, जिला– रायगढ़ (छ.ग) अपनी स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण करने पर स्वर्ण–जयंती मना रहा है । इस अवसर पर प्रकाशित ''सृजन'' पत्रिका के माध्यम से समस्त छात्र–छात्राओं की कला एवं प्रतिभा का प्रस्फुटन होगा । ये छात्र भविष्य में अच्छे नागरिक के साथ–साथ अपनी मंजिल को प्राप्त करेंगे, यही मेरी शुभकामाना है ।

इस अवसर पर समस्त महाविद्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ ।

(ए. के. घृतलहरे)

कार्यालय पुलिस अनुविभागीय अधिकारी
खरसिया, जिला–रायगढ़ (छ.ग.)
शा. मो. नं. – 9479193205
कार्या. दूर. नं. – 07762–273195

शुभकामना संदेश

महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, खरसिया, जिला– रायगढ़ (छ.ग.) अपनी स्थापना के 50 वर्ष करने के उपलक्ष्य में स्वर्ण जयंती मना रहा है । इस अवसर पर महाविद्यालय परिवार की ओर से प्रकाशित होने वाली पत्रिका ''सृजन'' के माध्यम से छात्र–छात्राओं की साहित्यिक प्रतिभा उजागर हो, यही मेरी शुभकामनाएं हैं ।

खरसिया

दिनांक : 09.01.2015

(श्रीमती मोनिका ठाकुर)
उप पुलिस अधीक्षक

प्राचार्य की कलम से ...

यह वर्ष महाविद्यालय का स्वर्ण जयंती वर्ष है । इस अवसर पर महाविद्यालयीन छात्र–छात्राओं की बौद्धिक, साहित्यिक एवं कलात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्ति देने के प्रयास में ''सृजन'' का यह अंक प्रस्तुत है । छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु कृत संकल्पित इस महाविद्यालय में समय–समय पर अनेक प्रकार के आयोजन किए गये । स्वच्छ भारत अभियान, ग्रीन कैम्पस, क्लीन कैम्पस, वृक्षारोपण, मतदाता जागरूकता कैम्पेन आदि चलाये गये । यह महाविद्यालय सत्र 2013–14 से नवीन महाविद्यालय जोबी को भी संचालित करने में सहयोग कर रहा है । महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं ने जिला स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता में भाग लिया एवं राज्य स्तरीय फुटबॉल, क्रिकेट, कबड्डी (महिला), कबड्डी (पुरूष), खो–खो (महिला), खो–खो (पुरूष), व्हॉलीबॉल (पुरूष), एथेलेटिक्स (महिला एवं पुरूष) में शिरकत की । एन.सी.सी. के कैडेट्स की सी.ए.टी.सी. कैम्प, एन.आई.सी. कैम्प आन्ध्रप्रदेश में भागीदारी रही । कई कैडेट्स आर्मी एवं पुलिस विभाग में विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं दे रहें हैं, यह अत्यंत हर्ष का विषय है । एन. एस.एस. का सात दिवसीय विशेष शिविर बरभौना, विकासखण्ड खरसिया में दिनांक 10.12.2014 से 16.12.2014 तक संपन्न हुआ । इसमें छात्रों की कलात्मक प्रतिभा उजागृत हुई । इस वर्ष महाविद्यालयीन अधोसंरचना के विकास में ''गर्ल्स कॉमन रूम'' का निर्माण किया गया ।

''सृजन'' के संपादक मण्डल, प्राध्यापकों एवं छात्र–छात्राओं ने पत्रिका के प्रकाशन हेतु परिश्रम के साथ योजनाबद्ध ढंग से कार्य किया है । मैं इस शिक्षण सत्र में महाविद्यालयीन परिवार एवं छात्र–संघ से मिले आत्मीय सहयोग के लिए आभार प्रकट करते हुए सभी के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ ।

डॉ. पी. सी. घृतलहरे
प्राचार्य

अनुक्रमणिका

1. शुभकामना संदेश
2. प्राचार्य की कलम से
3. संपादकीय
4. महाविद्यालय का परिचय
5. स्कूल के वो दिन — गीता साहू 1
6. परिवर्तन की हुँकार — लता पटेल 2
7. भारत माँ तुम्हें नमन — कमलेश नायडू 2
8. माँ — मंजू पटेल 3
9. आजादी, दहेज — देवलता कुर्रे 4
10. बेटियाँ — वर्षा देवांगन 5
11. प्रयास — संगीता भगत 5
12. आसमां से उतरके — सीमा पटेल 6
13. मेरी आशा प्रभु — संजय कुमार सतनामी 7
14. भारत माँ की पुकार — कु. राधिका पटेल 9
15. बन के सितारा — सीमा पटेल 10
16. तेरी पनाह में — सविता गवेल 10
17. कालेज का जीवन — दुर्गा प्रसाद यादव 11
18. क्या एक दिन ऐसा भी आयेगा — संगीता राठिया 11
19. जीवन — घनश्याम पटेल 12
20. मासुमियत — मीना जायसवाल 12
21. डर के आगे जीत है, जिंदगी — त्रिलोकसिंह बघेल 13
22. कुछ सीखो — एस. के. मेहरा 14
23. मैं एक माली हूँ — शौकीलाल बरेठ 14
24. मेरी अभिलाषा — हीराशंकर सोन 14
25. टण्डन सर की अकादमिक यात्रा — अनिल राज सिदार 15
26. मेक इन इंडिया : मापदंड और पहल — गायत्री राठिया 17
27. हमारे अधीक्षक — पी. आर. तिरोले 17
28. स्त्री जागेगी तभी बात बनेगी — रसीलो राठिया 18
29. बेटी का भाग्य — डॉ रविन्द्र चौबे 19
30. ऑललाईन टूल — रचिता अग्रवाल 20
24. हिन्दी का परिचय — लोकेश शर्मा 21
25. पर्यटन उद्योग में संभावनाएं — डॉ. रमेश टण्डन 25
26. राष्ट्रीय एकता एवं जातिवाद — प्रो. मनोज साहू 26
27. PARADISE LOST — डॉ. तृप्ति शुक्ला 27
28. मानव जीवन में शिक्षा का महत्व — प्रो. शुचिलग्ना त्रिपाठी 29
29. एन. सी. सी. (विभागीय प्रतिवेदन) — प्रो. बी. एल कुर्रे 30
30. एन.एस.एस. (विभागीय प्रतिवेदन) — प्रो. श्रीमती सरला जोगी 31
31. खेल–खास (विभागीय प्रतिवेदन) — प्रो. एम. एल. धिरही 33
32. छात्र–संघ पदाधिकारी (फोटो परिचय) — डॉ. रमेश टण्डन 34
33. अधिकारी / कर्मचारी परिचय 35

संरक्षक एवं प्राचार्य
डॉ.पी.सी. घृतलहरे

प्रधान संपादक
डॉ. रविन्द्र चौबे

संपादक
डॉ. रमेश टण्डन

प्रबंध संपादक
प्रो. एम.एल. धिरही
डॉ. पी. एल. पटेल
डॉ. सुशीला गोयल
डॉ. अर्चना सिंह
डॉ. दिलीप अम्ब्रेला
प्रो. सरला जोगी
प्रो. मनोज साहू
प्रो. काश्मीर एक्का
प्रो. अश्वनी पटेल

टीप : इस पत्रिका में वर्णित, छात्र या शिक्षक के विचार (कविता, लेख या प्रतिवेदन) उनके अपने हैं । किसी भी आपत्ति या विवाद की स्थिति में वे स्वयं जिम्मेदार होंगे । इस संबंध में न्यायालयीन प्रकरण, यदि आवश्यक हुआ तो, सिर्फ खरसिया स्थित न्यायालय में चलेगा ।

संपादकीय

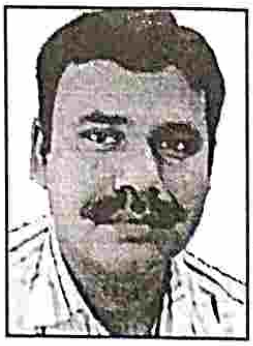

भागवत् कथा एवं ज्ञान यज्ञ की नगरी, धनिकों की धरा, उच्च राजनयिकों की जन्मस्थली खरसिया स्थित, लगभग 30 किमी. की परिधि में बसने वाले युवा के मन–मस्तिष्क में भाषा, कला, वाणिज्य और विज्ञा के क्षेत्र में शिक्षा का संचार करने वाले, वर्तमान में बिलासपुर विश्वविद्यालय बिलासपुर से संबद्ध महात्मा गां शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, खरसिया जिला–रायगढ़ (छ.ग.) ने सत्र–2014–15 में अपनी स्थाप के 50 वर्ष पूर्ण किया । अनुसूचित क्षेत्र में स्थापित होने, प्राकृतिक वनों तथा सुरम्य वातावरण से आच्छादि क्षेत्रों के निकट होने, नगर की घनी आबादी से किंचित् पृथक होने, पोस्ट मैट्रिक बालक व कन्या छात्रावासों अति निकट होने, स्टेडियमनुमा बृहद् खेल प्रांगण होने आदि के कारण यह महाविद्यालय प्रतिवर्ष सहस्रा छात्र–छात्राओं को नियमित अध्ययन व इससे जुड़ी अन्य सुविधाएं मुहैया कराता है । अतः यह कहना अप्रासंगि नहीं होगा कि इस विशाल छात्र समूह में विभिन्न प्रकार की प्रतिभाएं सुप्त व जागृत अवस्था में विद्यमान हैं, जिन समय–समय पर पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से पाठक–पालक तक पहुँचाने का कर्तव्य महाविद्यालय परिवार क होना चाहिए । महाविद्यालय परिसर में आयोजित विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों, राज्य/विश्वविद्यालय स्तर क विभिन्न आयोजनों में महाविद्यालय की उपलब्धियों और सहभागिता का प्रकाशन समाचार–पत्रों के माध्यम से ह जाता है । परंतु महाविद्यालय की साहित्यिक प्रतिभा, जिन्हें मंच प्राप्त नहीं हो पाती या जो मुखरित होने झिझकते हैं, को लेखनी के माध्यम से जानने का अवसर, साथ में महाविद्यालय के विभिन्न विभागों क सकारात्मक गतिविधियों का ज्ञान महाविद्यालयीन पत्रिका मात्र के द्वारा मिलता है । इस भावना को मूर्त रूप दे की कोशिश में स्वर्ण–जयंती के शुभ अवसर पर पूरा महाविद्यालय परिवार, छात्र–संघ पदाधिकारियों के सा पत्रिका "सृजन" प्रकाशित कर रहा है । इसमें छात्र–छात्राओं की मौलिक भावनाएं समाहित हैं, साथ में विभिन विभागों की उपलब्धियॉ भी ।

जिन जन प्रतिनिधियों/अधिकारियों ने इस पत्रिका की सफलता के लिए शुभकामनाएं दी हैं और जिनक भावना लिखित या मौखिक रूप से हमारे साथ जुड़ी हुई हैं, उन्हें कोटि–कोटि धन्यवाद । हमारे संरक्षक प्राचा महोदय डॉ. पी. सी. घृतलहरे का हमेशा आशीर्वाद प्राप्त हुआ, इन्होंने इस पत्रिका के लिए प्रेरणा दी एवं मार्गदर्श किया । महाविद्यालय के प्रति चिंतित, समर्पित, जुझारू, युवा नेता, नगरपालिका परिषद खरसिया के अध्यक्ष श्री कमल गर्ग का उनके सहयोगी भाव के लिए हृदय से धन्यवाद । जनभागीदारी समिति के अध्यक्ष श्री धनसा यादव को महाविद्यालय के प्रति उनकी सजगता व कर्मठता के लिए साधूवाद । महाविद्यालय के समस प्राध्यापकों, कर्मचारीगण को अतीव धन्यवाद, सबने हर पल इस पर अपना विचार दिया । समस्त छात्र–छात्राअ

व इनके छात्र–संघ पदाधिकारी अध्यक्ष ज्योतिसिंह, उपाध्यक्ष भरत डेंजारे, सचिव मनीष रावलानी, सह–सचिव दुर्गा प्रसाद यादव के सहयोग का स्वागत है । रचनाकारों का आभार ।

शुरूआती दौर कहें या व्यापक प्रचार–प्रसार का आभाव कहें, हमें कम रचनाएं प्राप्त हुई हैं, यह इस पत्रिका के लिए बीजांकुरण के समान है । परंतु इसे बरगद के समान वृहद् होने से कोई नहीं रोक सकता, ऐसा हमारा विश्वास है । हमारा प्रयास पत्रिका को बेहतर करने का रहा है, इसके बावजूद, कुछ कमी रहने से ही उसके सुधार या विकास की संभावना भी बनी रहती है । अतः कमी की पूर्ति में या सुधार की उम्मीद में पाठकों से आने वाले सुझाव या शिकायत का हम स्वागत करेंगे ।

अगले अंक में, जिन रचनाकार छात्रों ने अपनी रचनाएं नहीं भेज पायीं या जिनके विचार से हम अवगत नहीं हो पाये, उनको स्थान मिलेगा । इसके अतिरिक्त "सृजन" की सृजनात्मकता, सृजनशील हो; इसका लाभ अधिकांश को मिले, यही कामना करता हूँ ।

बसंत पंचमी, 2015

डॉ. रमेश टण्डन

महाविद्यालय का परिचय

महात्मा गाँधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, खरसिया, जिला– रायगढ़ की स्थापना सर्वप्रथम नगरपालिका परिषद, खरसिया द्वारा एक अशासकीय महाविद्यालय के रूप में सन् 1964 में हुई थी जिसके तहत केवल कला संकाय के अंतर्गत बी. ए. की कक्षाओं का संचालन किया जाता था । तत्कालीन नगरपालिका परिषद के अध्यक्ष एवं महाविद्यालय शिक्षा समिति के पदेन अध्यक्ष स्व. श्री लखीराम अग्रवाल जी के प्रयास से यहाँ पर वाणिज्य संकाय प्रारंभ किया गया । पूरे अविभाजित मध्यप्रदेश में यह महाविद्यालय नगरपालिका परिषद द्वारा संचालित एक मात्र महाविद्यालय था तथा अविभाजित रायगढ़ जिले में वाणिज्य की उच्च शिक्षा इसी महाविद्यालय में प्रारंभ की गई थी । नगरपालिका द्वारा महाविद्यालय संचालन के कार्यकाल में अनेक बाधाएं आयीं परंतु महाविद्यालय के संस्थापक अध्यक्ष श्री लखीराम अग्रवाल के क्षेत्र के सामाजिक – सांस्कृतिक – शैक्षणिक विकास के पक्के इरादे तथा दूर दृष्टि के कारण यह महाविद्यालय निरंतर विकास करता रहा । यह महाविद्यालय पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के अंतर्गत 1964 से 1983 तक तथा गुरूघासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर से 1984 से 2012 तक संबद्ध रहा । वर्तमान में यह महाविद्यालय बिलासपुर विश्वविद्यालय, बिलासपुर से संबद्ध है । राज्य शासन, स्थानीय स्व–शासन/नगरीय कल्याण विभाग एवं उच्च शिक्षा विभाग से यह दबाव आया कि नगरपालिका परिषद का कार्य महाविद्यालय संचालित करना नहीं है तथा इसके लिए पृथक से कोई अनुदान किया जावेगा, अतः इसे बंद किया जावे । इसके बावजूद क्षेत्र की जनता की मांग, विद्यार्थियों तथा पालकों की अभिरूचि तथा उस समय के संचालक मंडल के पदाधिकारियों की दृढ़ इच्छा के कारण यह महाविद्यालय निर्वाध गति से विकास के मार्ग पर आगे बढ़ता रहा । उस दौरान महाविद्यालय को यू. जी.सी. एक्ट के 2–एफ तथा 12 बी के तहत मान्यता भी मिली तथा निरंतर अनुदान भी प्राप्त हुए ।

राज्य शासन की नीति के तहत दिनांक 19 मार्च 1984 को महाविद्यालय का शासकीय अधिग्रहण डॉ. अमिताभ लाहिड़ी, पूर्व प्राचार्य किरोड़ीमल शासकीय कला, विज्ञान एवं वाणिज्य स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, रायगढ़/क्षेत्रीय अतिरिक्त संचालक, उच्च शिक्षा संचालनालय, बिलासपुर संभाग; प्रो. ए. शकूर विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी उच्च शिक्षा विभाग, बिलासपुर संभाग तथ प्रो. व्यासनारायण पाण्डेय के नेतृत्व में किया गया एवं इस दिनांक से नगरपालिका कला एवं वाणिज्य उपाधि महाविद्यालय, शासकीय महाविद्यालय के रूप में परिवर्तित हो गया । 1964 से 1990 तक महाविद्यालय की कक्षाएं नगरपालिका परिषद द्वारा निर्मित तथा उनके द्वारा उपलब्ध कराए गए पुराने भवन में संचालित होती थी । इस दौरान महाविद्यालय में सुप्रसिद्व अर्थशास्त्री एवं उच्च शिक्षा के नीतिकार डॉ. सत्यसहाय श्रीवास्तव, प्रो. बी. डी. शर्मा तथा प्रो. डी. के. बाजपेयी जैसे प्रभृति विद्वानों ने प्राचार्य के रूप में महाविद्यालय के विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया । इस महाविद्यालय के प्रारंभिक दिनों में वाणिज्य संकाय के पूर्व मेघावी छात्र श्री सुभाष चंद्र अग्रवाल इसी महाविद्यालय में वाणिज्य संकाय में वरिष्ठ प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं दे चुके हैं । स्थापनाकाल के महाविद्यालयीन प्राध्यापकों एवं अधिकारियों में प्रो. दिलीप कुमार बाजपेयी, प्रो. भागवतदास शर्मा, प्रो. सीताराम अग्रवाल (मित्तल), प्रो. रामबिलास थवाईत, प्रो. भगवानधर दीवान, प्रो. कुंजबिहारी चतुर्वेदी, श्री गोविंदराम थवाईत (ग्रंथपाल), डॉ. विजेन्द्र कुमार

पाण्डेय, प्रो. श्रीकुमार पेल्लई, डॉ. सतीश देशपांडेय इत्यादि ने महाविद्यालय के विकास में अपना उल्लेखनीय योगदान किया ।

सन् 1988 महाविद्यालय के इतिहास का स्वर्णिम वर्ष था जब खरसिया विधानसभा क्षेत्र से अविभांजित मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री अर्जुनसिंह जी, उपचुनाव में क्षेत्रीय विधायक के रूप में चुने गये । इनके द्वारा शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय खरसिया के नये शासकीय भवन के निर्माण हेतु राशि स्वीकृत की गयी। यह शासकीय भवन 1990 में बनकर तैयार हुआ, तब से यह महाविद्यालय नये एवं वर्तमान भवन में संचालित हो रहा है । कालान्तर में खरसिया के पूर्व विधायक तथा म.प्र. शासन/छ.ग. शासन के पूर्व कैबिनेट मंत्री माननीय शहीद श्री नंदकुमार पटेल जी के द्वारा महाविद्यालय से लगे हुए लगभग 16 एकड़ भूमि में राज्य शासन, खेल एवं युवा कल्याण विभाग के अनुदान से मिनी स्टेडियम का निर्माण हुआ । इसका लाभ महाविद्यालय, पूरे नगर, क्षेत्र के विद्यार्थियों, आम जनता को मिल रहा है। इस स्टेडियम को तकनीकी रूप में कई खेलों के लिए तैयार किया गया है । इसका कुशल संचालन तथा देख–रेख महाविद्यालय के स्थापना काल से 2013 तक क्रीड़ाधिकारी श्री एम. डी. वैष्णव के द्वारा किया गया जिसे वर्तमान में डॉ. आर. के. टण्डन संभल रहे हैं । महाविद्यालय में नियमित विद्यार्थियों के लिए खेल एवं युवा कल्याण विभाग तथा उच्च शिक्षा विभाग के द्वारा एक मल्टी जिम्नेजियम भी स्वीकृत किया गया है जो नियमित विद्वार्थियों के लिए निर्धारित सीमित समय में संचालित किया जाता है ।

तीव्र गति से विकास कर रहे इस महाविद्यालय में बढ़ती हुई विद्वार्थी संख्या को दृष्टिगत रखते हुए महाविद्यालय के संस्थापक अध्यक्ष स्व. श्री लखीराम अग्रवालजी, सांसद राज्य सभा के द्वारा दो वृहद आकार हाल एवं बरामदा तथा माननीय शहीद नंदकुमार पटेल जी के सहयोग से राज्य शासन, राज्य शहरी विकास बधिकरण, नगरीय कल्याण विभाग द्वारा चार अध्ययन कक्षों का निर्माण कराया गया ।

महाविद्यालय के शासनाधीन होने के उपरांत अँचल के जानेमाने अर्थशास्त्री डॉ. अमिताभ लाहिड़ी, सुप्रसिद्ध डॉ. बी.पी. त्रिपाठी, आँग्ल भाषा एवं साहित्य के विद्वान डॉ. दिनेश पाण्डेय, वाणिज्य के प्राध्यापक एस. आर. अग्रवाल, राजनीति विज्ञान के प्रो. डॉ. बी. डी. शर्मा तथा हिन्दी साहित्यकार डॉ. डी. के. बाजपेयी ने प्राचार्य तथा आहरण एवं संवितरण अधिकारी के कार्यभार का सफलतापूर्वक निर्वहन किया । 1999 का वर्ष महाविद्यालय के इतिहास में इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि क्षेत्र के रसायन शास्त्र विभाग के ख्यात नाम प्रोफेसर एवं पूरे प्रदेश में राष्ट्रीय सेवा योजना के आधार स्तंभों में से एक प्रो. व्यासनारायण पाण्डेय को राज्य शासन ने स्थायी रूप से प्रभारी प्राचार्य एंव आहरण संवितरण अधिकारी के रूप पदांकित किया । उन्होंने 9 वर्षों की दीर्घ अवधि तक महाविद्यालय की सेवा की तथा जुलाई 2008 में स्थानांतरित हुए । इनके कार्यकाल में सन् 2005–06 में महाविद्यालय का, भारत सरकार मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली की "नैक" द्वारा महाविद्यालय का मूल्यांकन किया गया तथा C++ ग्रेड प्रदान किया गया । महाविद्यालय का पुनः "नैक" मूल्यांकन आगामी वर्षों में किया जाना है, जिसके लिए व्यापक तैयारियाँ की जा रहीं हैं । महाविद्यालय में दसवीं पंचवर्षीय योजना के तहत लायब्रेरी एक्सटेंशन का बिल्डिंग का निर्माण लोक निर्माण विभाग से कराया गया है । जुलाई 2008 से 17 अक्टूबर 2010 तक महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य एवं आहरण संवितरण अधिकारी का दायित्व प्रो. बी.के. पठेल

ने कुशलतापूर्वक संपादित किया ।

महाविद्यालय में लगभग 31 हजार पाठ्य एवं संदर्भ ग्रंथों का सुसज्जित संग्रह है जिसका संचालन ग्रंथपाल श्री पी. आर. तिरोले ने सेवानिवृत्ति (2013–14) तक किया । महाविद्यालय में एक प्लेसमेंट एवं वाचनालय की व्यवस्था है जहाँ पत्र–पत्रिकाएँ नियमित रूप से आती हैं । महाविद्यालय में एन. एस. एस. की इकाई संचालित है जिसके कार्यक्रम अधिकारी प्रो. एम. एल. धीरही हैं । इसी तरह 28 सी. जी. बटालियन एन. सी. सी.रायगढ़ के नियंत्रण में महाविद्यालय में 53 कैडेट्स की एक टुकड़ी कार्यरत है जिसके एन. सी. सी. अधिकरी प्रो. सरला जोगी है । युवा रेडक्रॉस, छात्र कल्याण परिषद/छात्र–संघ, राष्ट्रीय युवायोजना, डब्ल्यू. डब्ल्यू. एफ., नेचर क्लब, उको क्लब, स्वच्छता प्रकोष्ठ की इकाइयाँ सक्रिय रूप से शैक्षणेत्तर कार्यों से जुड़े हुए हैं । वर्तमान में महाविद्यालय के प्राचार्य का दायित्व डॉ. पी. सी. घृतलहरे अक्टूबर 2010 से संभाल रहे हैं ।

□□□

स्कूल के वो दिन

कु. गीता साहू
बी.एससी. प्रथम वर्ष (बायो.)

स्कूल के वो दिन
आज फिर स्कूल जाने को दिल करता है ।
सुबह-सुबह जल्दी उठ नहाने को दिल करता है ।
स्कूल ड्रेस पहन टाई लगाने को दिल करता है ।
आज फिर स्कूल जाने को दिल करता है ....
लाईन में लगकर प्रेयर करने को दिल करता है ।
एक दूसरे को धक्का दे, भागने को दिल करता है ।
आज फिर स्कूल जाने को दिल करता है ....
क्लॉस के खाली प्रियड में, एरोप्लेन उड़ाने को दिल करता है ।
आज फिर स्कूल जाने को दिल करता है ....
क्लास में मैम का सवाल पूछना और चुपचाप खड़े हो जाने को दिल करता है ।
होमवर्क न करना और क्लॉस में बहाने बनाने को दिल करता है ।
आज फिर स्कूल जाने को दिल करता है ....
सोसियल साइंस के प्रियड में सोने को दिल करता है ।
छुट्टी के इन्तजार में बेल की आवाज सुनने को दिल करता है ।
आज फिर स्कूल जाने को दिल करता है ....
आज फिर उन दोस्तों के साथ बात करने, लड़ने, झगड़ने को दिल करता है ।
सब कुछ भूल मस्त हो जाने , सपनों में खो जाने को दिल करता है ।
आज फिर स्कूल जाने को दिल करता है ....

□□□

परिवर्तन की हुँकार

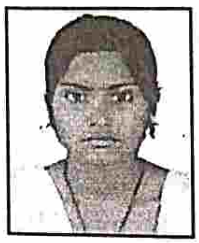

कु. लता पटेल
बी.एससी. अंतिम वर्ष (बायो)

राष्ट्र घिरा हो चौतरफा, जब गिद्धों के पंजों से,
स्वाभिमान चोटिल होता हो, राष्ट्र विरोधी हथकण्डों से ।
पत्राचार से नेता का, भ्रष्टाचार का नाता है,
जहाँ जले सिरमौर तिरंगा, कटती लाखों गौ माता हैं ।
भारती का मुकूट पड़ा है, टूटा केसर की क्यारी में,
यहाँ अपराधी शरण पा रहे, सत्ता की चार दिवारी में ।
माँ की हर रग दुखती है, इस पर तनिक विचार करो,
स्वराष्ट्र हो उन्नत अपना, परिवर्तन की हुँकार भरो ।
अपनी निजता की खातिर, समय ने नाता तोड़ दिया,
अपना महल बनाकर ऊँचा, राष्ट्र को पीछे छोड़ दिया ।
पाकर पश्चिम की चकाचौंध को, अपनी मिट्टी से टूट गये,
जो इंडिया को देख-देखकर भारत भूमि को भूल गये ।
पुरखों की यश गाथा से, न अब वो अंजान रहे,
ऋषियों की पावन थाती पर, हर युवा अभिमान करें ।
राष्ट्र वैभव की वाणी में, क्रांति का झंकार भरो,
स्वराष्ट्र हो उन्नत अपना, परिवर्तन की हुंकार भरो ।
पड़ी-पड़ी जो जंग खा रही, वो तेज धार तलवार करो,
बाना छोड़ो कायरता का, उठो-उठो निर्माण करो ।
सब वंशज हो श्रीराम के तम का इतिहास मिटा दो,
अनाचार आतंक नशे को, नारी का परिहास मिटा दो ।
समय नहीं है चुप रहने का, नवयुग की लहर जगा दो,
युग ऋषि के गांडीव की, अब जग को टंकार सुना दो ।
गंगा, गीता, गौ, गायत्री, सब अभी स्वीकार करो,
स्वराष्ट्र हो उन्नत अपना परिवर्तन की हुंकार भरो ।
परिवर्तन की हुंकार भरो ।

भारत माँ तुम्हें नमन

कमलेश नायडू
बी. ए. प्रथम वर्ष
(संकलित)

हे भारत माँ तुम्हे नमन
तुम पर चढ़ाऊँ श्रद्धा सुमन ।

प्रेम सुधारस सदा पिलाती
गीत महिमा तुम्हारे गाऊँ
हे भारत माँ तुम्हे नमन ।।

जननी तुम हो प्राणों से प्यारी
हे भारत माँ तुम्हे नमन ।।

तन-मन जीवन सब कुछ अर्पण
करूँ आपके चरणों में
हे भारत माँ तुम्हे नमन ।।

मिले अगर आशीष तुम्हारा
बदल सकूं जीवन की धारा ।

हे भारत माँ तुम्हे नमन
तुम पर चढ़ाऊँ श्रद्धा सुमन ।।

□□□

कु. मंजू पटेल
बी.एससी. द्वितीय वर्ष (गणित)

माँ तेरी याद है आयी आज ।
आँखें हैं भर आयी आज ।
चारों तरफ तनहाई आज ।
सुझे न मुझको कोई भी आज ।
माँ तेरी याद है आयी आज ।।

तेरी नन्हीं–सी मुनिया अकेली है ।
जीवन उसकी पहेली है ।
बुझाकर जिसको नहीं पा सकता ।
कोई भी ताज ।
माँ तेरी याद है आयी आज ।।

तू ही समझे तू ही जाने ।
मेरी हर जिद को तू माने ।
गलतियों पर डाँट जमाए ।
भटक जाऊँ तो राह दिखाए ।
माँ, मैं तुझसे न होऊँगी कभी नाराज ।
माँ तेरी याद है आयी आज ।।

सपने देखना तुमने सिखाया ।
तुमने ही उत्साह बढ़ाया ।
आशा जगी, विश्वास जगा ।
हृदय में ज्ञान का प्रकाश भरा ।
हो गया पावन, मेरा हृदय बना तेरा मंदिर ।
तेरी भक्ति की गुँजन से, जो गया है घिर ।
मेरे हृदय राज्य की रानी तू ।
माँ, मेरी सयानी तू ।
मेरे हृदय पर सिर्फ तेरा है राज ।
माँ तेरी याद है आयी आज ।।

हो गया मुझको ये आभाष ।
रहती है तू हर पल मेरे साथ ।
चाहे दिन हो, चाहे रात ।
हर विपदा में तूने दिया साथ ।
बिगड़ी काज को दिया आगाज ।
माँ तेरी याद है आयी आज ।।

न कोई मान, न सम्मान ।
पर माँ मेरी, तू है मेरी जान ।
तेरे लिए मैं हो जाऊँ कुर्बान ।
एक ही माँ के बच्चे हम ।
अलग–अलग हैं इस बात का है गम ।
फूट डाले टूटा समाज ।
माँ तेरी याद है आयी आज ।।

पापों का अंधेरा घनेरा,
पुण्य की नगरी को आ घेरा ।
नहीं है यहाँ नारी का मान,
क्या ? नहीं है नारी भी एक जान ।
यहाँ नहीं कोई, रखने वाला इसकी लाज ।
माँ तेरी याद है आयी आज ।।

□□□

जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं की, उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश नहीं की
– अलबर्ट आइंस्टीन

आजादी

कु. देवलता कुर्रे
एम. ए. अंतिम वर्ष (हिन्दी सा.)

इस आजाद भारत में,
मुझे भी आजादी चाहिए ...
रातों में बेखौफ आन-जाने की,
मुझे भी आजादी चाहिए ...
अपना फैसला खुद कर जाने की,
सपनों को जीने की, अपनों के लिए लड़ने की,
इस आजाद भारत में
मुझे भी आजादी चाहिए ...
एक कानून गढ़ने की,
जिसमें कोई भेदभाव न हो,
मुझे भी आजादी चाहिए ...
मंदिर में कुरान पढ़ने की,
मस्जिद में दीया रखने की,
इस आजाद भारत में,
मुझे भी आजादी चाहिए ...
नारी के सम्मान की,
उनकी अपनी पहचान की,
इस आजाद भारत में,
मुझे भी आजादी चाहिए ...
बेखौफ चलने की आधी रात में,
मुझे भी आजादी चाहिए ... !!

□□□

दहेज

दहेज की बलदेवी पर, मैं आज फिर चढ़ाई जाऊँगी ....
रोक लो मुझे
एक दर्द की कहानी बनने से,
दहेज की बलि चढ़ने से ...
कोई तो आवाज करो,
इसे रोक लगाने पर
कुछ सपने लेकर आयी थी मैं यहाँ ...
पर जाने क्या खता कर बैठी,
दहेज लोभियों के लालच पर
खरी न मैं उतर पाई
चंद रूपयों की खातिर
आज फिर एक मैं मासूम
जिंदा जलाई जाऊँगी,
दहेज की खातिर जलने से ...
रोक लो मुझे ...
दर्द होता है, सितम होता है
तन तो जल जाता है पर,
हमेशा मन रोता है...
खिलाफ भी कोई उठाया,
अगर मेरे लिए...
चंद दिनों अदालत में बहस चल कर
फिर मैं एक फाइल बन, सिमट जाऊँगी ...
जड़ से इसे खतम करो,
नहीं तो दहेज की बलदेवी पर,
रोज जलाई जाऊँगी !!! ....

□□□

बेटियाँ

कु. वर्षा देवांगन
बी. एससी. प्रथम वर्ष (बायो.)

है समस्या बेटे गर, समाधान है, बेटियाँ,
सबको दुःख में जैसे, ठण्डी छाँव है बेटियाँ ॥

होकर भी धन पराया है, सच्चा धन अपना,
दिखावे की दुनिया में, गुप्तदान है बेटियाँ ॥

तनाव भरी गृहस्थी में, है चारों ओर तनाव,
व्यंग्य बाणों के बीच, ढ़ाल है बेटियाँ ॥

हैं दूर वे, हम सबसे, हैं फिक्र उन्हें हमारी,
करती दुआएँ हर दम, खैर ख्वाब है बेटियाँ ॥

है बेटा कुल दीपक, घर में रोशन जिससे,
दो घर जिससे रोशन, आफताब है बेटियाँ ॥

हैं लोग वे जल्लाद, जो खत्म उन्हें हैं करते,
टिका जिसमें परिवार, वह बुनियाद है बेटियाँ ॥

मांगती है मन्नत, बेटों की खातिर दुनिया,
अपनी नजर में दोस्तों, महान है बेटियाँ ॥

□□□

प्रयास

कु. संगीता भगत
बी. एससी. अंतिम वर्ष

प्रयास का रिमझिम बरसता सावन है
प्रयास झिलमिल सितारों का आँगन है ।
प्रयास प्रेम का मदमस्त पवन है
प्रयास के बिना रूह तरसती है
इसे पाने की आस जगती है
यह सूखे होठों की प्यास है
न जाने कितने दिलों की आस है !
प्रयास मंदिर का गुंबद है
प्रयास वाहेगुरू का शब्द है
प्रयास ईसा का संदेश है
प्रयास मसजिद की अजान है
प्रयास हिंदी प्रेमियों का इकतारा है
भटके हुए लोगों का सहारा है
शिक्षा और ज्ञान का अद्भुत द्वार है
भाषा की नई विचारधारा है
प्रयास मेघों का इन्द्रधनुष है
प्रयास आकाश का ध्रुव तारा है
प्रयास है भास्कर की नई किरण
प्रयास धरती का पालनहारा है
प्रयास दो आत्माओं का मिलन है
रचनाओं का हार-सिंगार है
भावनाओं का पारावार है
पाठकों के लिए अमूल्य उपहार है ।।

□□□

जिदगी जीना आसान नहीं होता,
बिना संघर्ष कोई महान नहीं होता ।
जब तक ना पड़े हथौड़े की चोट,
पत्थर भी भगवान नहीं होता ।

आसमां से उतर के...

कु. सीमा पटेल
बी.एससी. द्वितीय वर्ष (गणित)

आसमाँ से उतरके,
आयी तेरे आँगन पे ।
चह-चहाती सोन चिरइया बनके,
माँ, पाने को प्यार तेरा ।।

तेरे सीने में मेरा दिल धड़के,
वाकिफ हूँ, मैं तेरे नस - नस से
आयी हूँ जादू की पुड़िया बनके,
माँ, हरने मैं जनजाल तेरा ।।
आसमां ..... प्यार तेरा ।।

तेरी बगिया की नन्ही सी कली मैं,
आयी हूँ, होठों पे मीठी मुस्कान लेके ।
बिखर जाऊँगी पंखुड़ियाँ बनके,
महकाने को संसार तेरा ।।
आसमां ..... प्यार तेरा ।।

मेरे नयनों में सपने तेरे,
चमके आशा की किरण लेके
आयी मैं चन्दनियाँ बनके,
चिरने गम का अंधकार तेरा ।।
आसमां ..... प्यार तेरा ।।

भेद-भाव को दूर करने,
बुराईयों से लड़के ।
आयी मैं नयी दुनिया बनके,
तुझे दिलाने माँ अधिकार तेरा ।।
आसमां ..... प्यार तेरा ।।

आज भी वह शक्ति है मुझमें,
कि तेरे हिस्से के सारे दुखड़े।
सह लूंगी मैं ऑलिया बनके,
दूंगी तुझे खुशियों का बहार तेरा ।।
आसमां ..... प्यार तेरा ।।

बिन तेरी प्रेम-सुधा के,
ये दुनिया जिंदा लाश लगे ।
आयी मैं तेरी मुनिया बनके,
पीने अमृत का धार तेरा ।।
आसमां ..... प्यार तेरा ।।

चाहे ले लूँ कोटि जनम मैं,
पर मेरा दिल तो यही कहे
कि तेरे आँगन की भी गइया बनके,
मैं चुका न सकूं आभार तेरा ।।
आसमां ..... प्यार तेरा ।।

सीखा चलना मैंने,
तेरी अंगुली पकड़के ।
तेरे बुढ़ापे की लकुठिया बनके,
माँ, मैं बनना चाहूँ आधार तेरा ।।
आसमां ..... प्यार तेरा ।।

माँ, तेरी ममता के आगे,
फिके है, दुनिया के ऐशो-आराम सारे ।
तेरी प्यारी-सी ऐश्वर्या बनके,
यश बढ़ाऊँ, बन जाऊँ जीने का सार तेरा ।।
आसमां ..... प्यार तेरा ।।

माँ, मैं आयी तेरे दर पे,
एक छोटी-सी आस लेके ।
कि तेरी प्यारी-सी गुड़िया बनके,
पा सकूँ संस्कार तेरा ।।
आसमां ..... प्यार तेरा ।।

कभी अंधियारा जो छाये,
आकर आँखों के आगे ।
नभ गंगा की जुगनिया बनके,
मैं भूला न सकूँ उपकार तेरा ।।
आसमां ..... प्यार तेरा ।।

मृत शरीर में प्राण पाने,
माँ मैं आयी ज्ञान पाने ।
तेरी सच्ची शिष्या बनके,
कहदूँ दुनिया से, ये ज्ञान का भंडार तेरा ।।
आसमां ..... प्यार तेरा ।।

□□□

मेरी आशा प्रभु

संजय कुमार सतनामी
बी. एससी प्रथम वर्ष (गणित)

सारी सृष्टि सृजन, मनोहर हर सदन ।
धरती ताल गूंजे हैं गगन भक्ति में डूब जन-जन ।।

भक्तोंकी पीड़ा सुनो हे बाल कृष्ण-मोहन ।
करते हैं नमन धरती ताल गूंजे है गगन ।।

विश्व है शांति का असि का न हो जनम ।
जग में बढ़ रहा कुकर्म आशा की छोड़ो किरण ।।

भक्तों की आशा तोड़ करते थे हवन ।
ऊपर से दिखे श्री फल, अंदर से बदबूदार सड़न ।।

आज भोग विलास, रिश्वतखोरी करते ये गहन ।
कलियुगी मानुष नहीं छोड़ते, नारी तो नारी माँ बहन ।।

न जाने ये सबको लागी कैसी ये लगन ।
सतयुग में भटके थे वन-वन राम लखन ।।

मेरा भी जीवन पार करा दे, न दे मुझे धरती में जनम ।
भक्ति में डूबी थी मीरा, सब लाज छोड़-शरम ।।

पापों के सागर में डूब रहे, सभी बचाले भगवन ।
मिट्टी का बनाया यह पुतला देकर हमें दर्शन ।।

सारी सृष्टि सृजन मनोहर, हर सदन ।
धरती ताल गूंजे है गगन करते हम नमन ।।

स्वर्ग सी धरा अपनी, स्वर्ग सा चमन ।
जम्मू है ताज अपनी, कन्या है इसकी शरन ।।

कभी था भारत विश्व गुरू, करते यहाँ शिक्षा ग्रहण ।
पर समय बदला, उच्च 200 विश्वविद्यालयों में न हुआ चयन ।।

हे प्रभु भारत फिर बन जाए विश्वगुरू करते हम नमन ।
ऐसा होगा जब तू आयेगा, झूम जायेगी धरती और गगन ।।

हे सतयुगी राम कब होगा तेरा कल्कि रूप जनम ।
फिर कब पढ़ाओगे हमें, गीता-पाठ धरम ।।

आप तो मन में तीर चलाते, बात में करते गमन ।
बालक हैं सब तेरे, बचा ले मेरा भी जीवन ।।

सारी सृष्टि सृजन मनोहर हर सदन ।
पीड़ा को हरो हे रघुपति राम-लखन ।।

बढ़ते युग में पीड़ा तन में नहीं दिल में होती कैसे करें सहन ।
मन की व्यथा बढ़ रही, न होता अब दमन ।।

कैसे रहें तुझ बिन, मन तरसे रामनाम चरण ।
बना मुझे योगी, मूर्ति में क्यों छिपे रमन ।।

न भटके कोई अंधियारी गलियों में जिये चैन और अमन ।
अंधेरा न हो जग में, चारों तरफ हो रौशन ही रौशन ।।

आतंक का ना हो साया यहाँ, हो जाए जब मिट्टी में दफन ।
रोटी-कपड़ा-मकान को न तरसे हमारी माँ और बहन ।।

सारी सृष्टि सृजन मनोहर हर सदन ।
धरती ताल गूंजे हैं गगन भक्ति में डूबे जन-जन ।।

जाति-पांति नही पूछे कोई, करता वो नित्य भजन ।
उसके संकट पल में कटे, जो करता प्रभु का सुमिरन ।।

सूर्य पर पड़ा जब ग्रहण, तो केतु न सह सका तपन ।
अदिति से भी ज्यादा तप रही, आज धरा की धड़कन ।।

विदेशी ताकतों का जब भी हुआ खलन ।
तब रानी लक्ष्मी, अवन्ती दुर्गा का हुआ जनम ।।

पर भारत में उन्मुक्त होकर, चला पश्चिमी सभ्यता चलन ।
नारी आज पहनी छविगृहों में, अर्ध नग्न वसन ।।

सारी सृष्टि बदली, न बदली अपनी सभ्यता, रहन-सहन ।
तब कलियुग में फिर दिखेंगे, राम सीता, न भटकेंगे कानन ।।

सारी सृष्टि सृजन मनोहर हर सदन ।
धरती ताल गूंजे है गगन, हे राम राम चरन ।।

शिक्षा-स्वास्थ्य तो बढ़ रहे,
क्या बच रही, माँ बहनों की लाज और शरम् ।।
भाषण में बोलना नहीं लाज बचाना होगा,
तब कहेगी दुनिया हमें वाह-वाह ।
सच में यहीं जन्में थे श्रीकृष्ण, राम-लखन ।।

सर्व सृष्टि समझी समझ ले सभी वतन ।
मैत्री मानवीयता से आगे बढ़ेगा अमेरिका, रूस, लंदन ।।

सारी सृष्टि सृजन मनोहर हर सदन ।
धरती ताल गूंजे हैं गगन भक्ति में डूबे जन-जन ।। □□□

भारत माँ की पुकार

कु. राधिका पटेल
बी. एससी. प्रथम वर्ष

रात की गहन नीरवता । चित्रकला प्रदर्शनी के दरवाजे बंद हो चुके थे । अंदर मद्धिम रौशनी थी । वहां एक चित्र के सामने एक स्त्री खड़ी थी । चित्र को गौर से निहारती उस स्त्री के चेहरे पर अपूर्व तेज था । उसकी ऑखों से अश्रुधारा बहकर ऑचल को भिगो रही थी।

स्त्री की ऑखें चित्र पर जमीं थी । चित्र में एक तरफ गाय का कटा सिर बना था, तो दूसरी तरफ सूअर का । बीच में सिर विहीन स्त्री–पुरूष के शवों का ढ़ेर लगा था । बच्चों के शरीर भी नजर आ रहे थे । सबका खून आपस में मिल रहा था। स्त्री की ऑखों से अविरल अश्रुधारा बहती रही । आखिर वह उन सबकी मॉ थी । वह भारत मॉ थी।

मॉ का हृदय व्याकुल हो गया था जब वह अपनी ही संतानों के शवों को देख रही थी । वह चीख–चीखकर पुकार रही थी कि मेरे बच्चों तुम सब आपस में एक दूसरे का खून मत बहाओ । इससे पहले भी कई विदेशियों ने मुझे बंधक बना लिया था और मेरे लाखो बच्चों का खून बहाया था। उन्होंने मुझे और मेरे अस्तित्व को बचाने के लिए अपना बलिदान कर दिया । उनके बलिदान का कर्ज तुम्हें चुकाना है । तुम मेरे अस्तित्व को नष्ट मत करो । संसार की आधुनिकता में तुम ऐसे रम चुके हो कि तुम्हे मैं नजर नहीं आ रही हूँ । भारत मॉ नवयुवकों से कहती है कि हे नवयुवक ! तुम मुझे और मेरे अस्तित्व को मिटाने से बचा लो । एक तुम ही हो, जो अपने उत्साह और परिश्रम से मेरे स्वरूप को नष्ट होने से बचा सकते हो, नहीं तो मेरी छवि धुंधली होते–होते सम्पूर्ण नष्ट हो जाएगी ।

भारत माता हम सबको संदेश दे रही है कि तुम सब अपने परिश्रम और त्याग से, सदा–सहयोग और भाईचारा से मेरे हृदय को उल्लास से भर सकते हो । आधुनिकता के सागर में ऐसे मत डूब जाना कि तुम्हें अपनी भारत माता भी दिखायी न दे । □□□

बनके सितारा

कु. सीमा पटेल
बी.एससी. द्वितीय वर्ष (गणित)

ये आसमान तेरा है ।
जिसपे चाँद का बसेरा है ।
फिर क्यों? ऐ बन्दे,
अंधेरे में बैठा है ।
नहीं मिलेगा तुझे, ये मौका दुबारा ।
चमक जा बनके सितारा ।।

तेरी पहचान से, मेरी पहचान है ।
तेरी लबों पर खिलती , मेरी मुस्कान है ।
फिर क्यों? ऐ बन्दे,
खुद से ही अनजान है ।
समझ मुझे भी तू जरा ।
चमक जा बनके सितारा ।।

आजमां कर देखले, तुझमें भी वह क्षमता है ।
संग-संग तेरे, मेरी ये ममता है ।
फिर क्यों? ऐ बन्दे,
तू पड़ा बेजान है ।
चीर दे गम का अंधियारा ।
चमक जा बनके सितारा ।।

सोंच न इधर-उधर की, सोंच सिर्फ क्या करना है ।
तू ही नदिया, तू ही सागर, तू ही तो झरना है ।
फिर क्यों? ऐ बन्दे,
मंद-मंद बहता है ।
बहा ले जा बिपदा को, तू है बहती धारा ।
चमक जा बनके सितारा ।।

□□□

तेरी पनाह

कु. सविता गबेल
बी.एससी. द्वितीय वर्ष (गणित)

हे ! परमेश्वर, हे ! परम्पिता ,
है रामायण कहता,
कहती है गीता ।
तू जड़ में और चेतन में ।
तू सृष्टि के कण-कण में ।
बसा है मेरे तन-मन में ।
तू आज्ञा दे तो, हे ! प्रभु ,
मैं भी एक पंक्ति उकेरूँ,
कि-''मैं पत्ती तेरे वृक्ष की,
तू जड़ है मेरे जीवन की ।।''

हे ! जगदीश्वर, हे ! प्राणदाता ,
है कहते पिता,
कहती है माता ।
तू बसा मन मंदिर में ।
बहते हुए समीर में ।
पावन नदियों के नीर में ।
तू चाहे तो मैं ये कहूं,
मैं भी एक पंक्ति उकेरूँ,
कि-''मैं पत्ती तेरे वृक्ष की,
तू जड़ है मेरे जीवन की ।।''

हे ! गरू, हे ! ज्ञानदाता ,
हर पल तुझे मैं साथ पाता,
पर मुझ अज्ञ को कुछ न आता ।
जीवन की इस राह में ।
धूप में और छाँह में ।
रखना सदा अपनी निगाह में ।
हे ! प्रभु , मैं तेरी शरण हूँ ।
तू कुछ कह दे तो मैं भी कहूँ,
कि-''मैं पत्ती तेरे वृक्ष की,
तू जड़ है मेरे जीवन की ।।''

□□□

कॉलेज का जीवन

दुर्गा प्रसाद यादव
बी.एससी. प्रथम वर्ष

है रीत जहाँ की प्रीत सदा
उस कालेज की बात बताता हूँ
लाठी टेक आजादी दिलायी
उस बापू की गाथा गाता हूँ।

है हमारा कॉलेज महात्मा गाँधी।
जिसके आगे झुकती है आँधी।

शुरू में लगता कॉलेज मुझे अनजान था।
खरसिया से सोनबरसा आना मेरा काम था।

पर धीरे-धीरे हमारा मन कॉलेज में रमने लगा।
और एक महिने में हमारा दिल सबसे मिलने लगा।।

यहाँ के छात्र संघ का कोई जवाब नहीं।
छात्रों की खुशी के आगे इनका कोई ख्वाब नहीं।।

ये कहते हैं साथ-मिलकर नाम रौशन करेंगे कॉलेज में
पढ़ लिखकर ऑक्सफोर्ड भी झुकेगा हमारे नालेज में।

□□□

क्या एक दिन ऐसा भी आएगा ?

भरत डेंजारे
बी.एससी. अंतिम वर्ष

संध्या का समय था,
मुजरे जैसा माहौल था।
चहुं ओर नारियां-ही-नारियां,
सिगरेट मुंह में दबाये,
पसरी हुई थीं।
मंच-पार्श्व से
एक अर्द्ध नग्न पुरूष आया,
मंच पर थिरकने लगा।
नारियों ने उसे,
अल्प-वस्त्रों को फाड़ देने की नजर से
घूरकर देखा,
वे पैसे भी फेंके।
कुछ समय बाद,
वह पुरूष,
सिर नीचे किए
उल्टे पैर
वापस चला गया।
फिर ताली बजी,
सिटीं भी बजी।
क्या एक दिन ऐसा भी आएगा ?

□□□

नजर रखो अपने विचार पर क्योंकि वे शब्द बनते हैं।
नजर रखो अपने शब्द पर क्योंकि वे कार्य बनते हैं।
नजर रखो अपने कार्य पर क्योंकि वे स्वभाव बनते हैं।
नजर रखो अपने स्वभाव पर क्योंकि वे आदत बनते हैं।
नजर रखो अपने आदत पर क्योंकि वे चरित्र बनते हैं।
नजर रखो अपने चरित्र पर क्योंकि उसमेंजीवन आदर्श बनते हैं।

जीवन

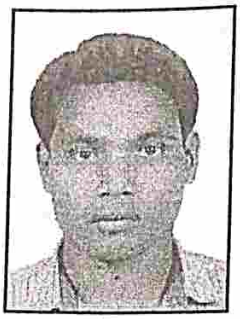

घनश्याम बघेल
बी.एससी. अंतिम वर्ष

जीवन का यह खेल है बड़ा निराला,
कौन यहाँ पर जीता है, तो कौन यहाँ पर हारा ।

ठहर के भी यहाँ न कोई ठहरा,
जो समझ पाये इन लहरों का कोई किनारा ।

बेला की हर डाली पर फूल कहां खिला ,
कभी पतझड़ों से जीवन बना ,
तो कभी फूलों की छांह में पला ।

मानव कुछ पाने के लिए कुछ खोता
ऐसे ही वह जीवन में कर लेता समझौता

हर रात के बाद आती है एक नई सुबह
कुछ एहसास और नई उमंगों के संग

हर दिन नहीं होता है एक जैसा
कहीं किसी का हल है तो किसी की समस्या

बस इस पथ पर यूँ ही तू चल
इस विश्वास से कि कहीं न कहीं आयेगी तेरी मंजिल

महान है कि तुझमें है फिर इतनी क्षमता
हार कर भी चाहता है तू सफलता

इस जीवन में तुझे देनी है एक और परीक्षा
सहन शक्ति और परम् वीरता की

जीवन का यह खेल है बड़ा निराला
कौन यहाँ पर जीता है तो कौन यहाँ पर हारा

□□□

आँखें भी खोलनी पड़ती हैं रोशनी के लिए,
महज सूरज निकलने से अंधेरा नहीं जाता

मासुमियत
(बालपन की)

कु. मीना जायसवाल
बी.एससी. अंतिम वर्ष

तू मासूम है, तू मासूम है,
मासुमियत तेरी फितरत है,
अच्छाई तेरी मासुमियत है,
तू चंचल है तू कोमल है,
तू मासूम है, तू मासूम है ।

तेरी अच्छाई ही तेरी कोमलता है,
बच्चों तुम मासूम हो, तुम मासूम हो,
न तुझमें छल है, न तुझमें पाप है,
तू जैसा भी है तू मासूम है,
न तुझमें घृणा है, न अहंकार है,
तू मासूम है, तू मासूम है ।

बच्चों तुम्हारी हंसी में झलकती तुम्हारी मासुमियत,
तुम्हारी हंसी ही तुम्हारी जिंदगी,
जो जी ले इस पल को, वह मुरझाये न कभी,
तू मासूम है, तू मासूम है ।

तुम्हारी किलकारी में झलकती तुम्हारी मासुमियत,
तुम्हारी अच्छाई में झलकती तुम्हारी मासुमियत,
तुम्हारी क्रीड़ाओं में झलकती तुम्हारी मासुमियत,
तू निष्छल है, तू निष्पाप है,
इसलिए तू मासूम है,
तू मासूम है, तू मासूम है ।

□□□

डर के आगे जीत
I am the Best

त्रिलोकसिंह बघेल
बी.एससी. द्वितीय वर्ष (गणित)

जब चलती है तेज हवा,
तुफान आने का डर लगता है ।
कलियाँ तो पसंद है मगर,
काँटों की चुभन से डर लगता है ।
छुना है ऊँचाइयों के शिखर को,
लेकिन गुमनाम खाइयों से डर लगता है ।
उड़ना है आसमानों पर
कही जमीं न मिले डर लगता है ।
खुशियों के रंगों से रंगना है दुनिया को,
बेरंग जिंदगी से डर लगता है ।
चाहता हूँ महफिल का हिस्सा बनूं,
भीड़ में तनहा हो जाने का डर लगता है ।
मंजिल तक पहुँचना है मुझे,
मुश्किल भरी राहों से डर लगता है ।
जब पा लुँगा खुद को मैं,
तब पा लुंगा सब कुछ मैं ।
तब ना मुश्किल भरी राहों से,
ना भीड़ में तन्हाइयों से,
ना बेरंग जिंदगियों से,
ना अंधेरे खाइयों से
ना काटों की चुभन से,
ना आने वाले तुफानों से,
ना लगेगा मुझको डर,
बन जाऊँगा मैं उस दिन बेहतर,
तब कहुँगा मैं
I am the Best.

□□□

जिंदगी

कभी हंसती-मुसकुराती, कभी रोती हुई ।
कभी उदास तो कभी नई आस पिरोती हुई ।
जिंदगी तुम कहाँ नहीं हो ।

कभी गुलिस्तां में, कभी बहार में,
कभी महफिल में, कहीं विरान में ।
न हो हमसफर, तो तन्हा ही,
चलती हो बिना इन्तजार के ।
जिंदगी तुम कहाँ नहीं हो ।

इस सफर में, रास्ते के मोड़ में,
ना जाने कितने हमसफर, साथ-साथ चलते हैं ।
छूट जाते हैं, हम साया भी साथ नहीं हो,
तो फिर भी बिना रूके, बिना थके चलती हो ।
जिंदगी तुम कहाँ नहीं हो ।

जब भी थककर तुम सोने जाती हो,
मौत की आगोश में थोड़ी देर ।
काले अंधेरे रात के बाद,
सुबह की नई किरण की तरह,
नई-नई, ताजा-ताजा महकती हुई ।
जिंदगी तुम कहाँ नहीं हो ।

□□□

टूटी कलम और गैरों से जलन हमें
खुद का भाग्य लिखने नहीं देती

कुछ सीखो ..

एस. के मेहरा
प्रयो. तक. रसायन शास्त्र
(संकलित)

लगा सको तो बाग लगाओ,
आग लगाना मत सीखो ।
बिछा सको तो फूल बिछाओ,
कांटे बिछाना मत सीखो ।
बोल सको तो सत्य बोलो,
झूठ बोलना मत सीखो ।
मिटा सको तो नफरत मिटाओ,
प्यार मिटाना मत सीखो ।
जला सको तो दीपक जलाओ,
दिल जलाना मत सीखो ।
कर सको तो सम्मान करो,
अपमान करना मतल सीखो ।
जा सको तो सत्संग में जाओ,
कुसंग में जाना मत सीखो ।

□□□

मैं एक माली हूँ ...

शौकीलाल बरेठ
ज. भा. स. कर्मचारी

मैं एक माली हूँ, फूल–पौधा लगाना मेरा काम । फूल तो कई प्रकार के होते हैं, लेकिन हर फूल–पौधों में कई प्रकार के कीड़े लगे रहते हैं, यहाँ तक कि जहरीले साँप भी टहनियों से लिपटे रहते हैं । इन जहरीले साँप–बिच्छुओं से मैं हमेशा निपटते रहता हूँ । फलों पर कीट तो बहुत आते हैं परंतु जब कभी भौंरा मंडराता हुआ आता है, तो वह चुपचाप नहीं आता बल्कि मधुर गीत गाते हुए आता है और मुझ माली को काम करते देख गाना सुनाके भोजन कर चला जाता है । फूल तो अनेक जगह हैं लेकिन मनुष्य फूलों की तलाश में अपने–अपने अराध्य देवों को अर्पित करने के लिए सुबह–शाम भटकता है । वह मनुष्य समझ नहीं पाता कि दूसरे के कमाए फूल को मैं कैसे अपने देव को अर्पित करूँ अगर वह समझ जाये तो अपने मेहनत से लगाये पौधे के फूल को भगवान को समर्पित कर पुण्य का भागीदार बन सकता है और भगवान का सुखद अनुभव कर सकता है ।

कृपया इन पर ध्यान देवें :–
द्वापरयुग में अइलू त्रेता में अइलू – 2
सत्युग में अइलू कलियुग में अइलू – 2

□□□

मेरी अभिलाषा ...

हीराशंकर सोन
बी. ए. द्वितीय वर्ष

मैं एन. सी. सी. का कैडेट हूँ,
एन. सी. सी. में जाना मेरा काम ।
खरसिया नगरी में मेरा मुकाम,
शनि मंदिर होते कॉलेज जाना मेरा काम ।
सत्य मार्ग पर चलते हुए,
सही राह दिखाना मेरा काम ।
मैं मन ही मन कहता हूँ,
पुलिस में जाना मेरा काम ।
पिता परमेवर से प्रार्थना मेरी,
पुलिस की वर्दी जल्दी दे–दे मुझे,
बारम्बार तुझे प्रणाम् ।
बस इतना ही मेरा ध्यान,
लोगों की सेवा करना मेरा काम ।

□□□

टण्डन सर की अकादमिक यात्रा

अनिलराज सिदार
एम.ए पूर्व (हिन्दी)

गायत्री राठिया
बी.ए अंतिम

21 नवंबर 2012 को सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) के पद पर इस महाविद्यालय में कार्यभार ग्रहण करने के बाद डॉ. आर. के. टण्डन सर के द्वारा निम्नानुसार अकादमिक कार्य किए गये –

1. मौलिक पुस्तक – काव्य संग्रह ''पीड़ा'' का प्रियंका पब्लिसिंग हाऊस, जयपुर से ISBN-978-81-929520-9-3 के साथ 2014 में प्रकाशित ।
2. पुस्तक – समाज का साहित्य और संस्कृति का विश्व, संपादक–प्रो. यज्ञप्रसाद तिवारी, प्रकाशक–श्री राधे प्रकाशन इलाहाबाद (ISBN-978-81-910741-3-0) में 10 पृष्ठ का एक पाठ प्रकाशित ।
3. अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ''रिसर्च डायजेस्ट'' बिलासपुर (ISSN-0973-6387) से शोध पत्र ''निबंधद्वय (व्यंग्य व ललित) लेखकों का निबंधगत तुलनात्मक अध्ययन'' प्रकाशित।
4. अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ''आन्वीक्षिकी'' वाराणसी (ISSN-0973-9777, GISI IMPACT FACTOR-0.2310) से शोध पत्र ''विनोदशंकर शुक्ल : व्यक्तित्व एवं व्यंग्य'' प्रकाशित।
5. अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ''रिसर्च डायजेस्ट'' (ISSN-0973-6387) से शोध पत्र ''महावीर चाचान : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' प्रकाशित।
6. अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ''शोध समीक्षा और मूल्यांकन '' जयपुर (ISSN-0974-2832, IMPACT FACTOR 1.0060) से शोध पत्र ''हरि जोशी : एक व्यंग्यकार'' प्रकाशित।
7. अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ''आन्वीक्षिकी '' से शोध पत्र ''हिन्दी का विकास'' से प्रकाशित।
8. अंतर्राष्ट्रीय जर्नल "DSIIJ" हरिद्वार (ISSN-2279-0578) से शोध पत्र ''प्रमुख ललित निबंधकारों की व्यंग्य दृष्टि'' प्रकाशित।
9. अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ''शोध सम्प्रेषण'' (ISSN-097-6459) में शोध पत्र ''कस्तुरी दिनेश : एक व्यंग्यकार'' प्रकाशित।
10. अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ''आन्वीक्षिकी'' से शोध पत्र ''महाकाव्य नामायणः गुरू घासीदास का सत्य''प्रकाशित।
11. अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ''सार्क '' (ISSN-2347-8373) से शोध पत्र ''अशोक शुक्ल : व्यक्तित्व एवं व्यंग्य'' प्रकाशित।
12. अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ''शोध समीक्षा और मूल्यांकन'' से शोधपत्र ''शिवानंद कामडेः एक व्यंग्यकार'' प्रकाशित।
13. अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ''नवीन शोध संसार'' नीमच (ISSN-2320-8767 IMPACT FACTOR 0.547) से शोध पत्र ''मतदाता जागरूकता अभियान में चुनाव आयोग तथा अन्य सामाजिक एवं शासकीय संस्थाओं की भूमिका, परिणाम, कठिनाईयों, सुझाव एवं राजनैतिक परिस्थितियों पर प्रभाव'' प्रकाशित।
14. राष्ट्रीय जर्नल ''एजुकेशन वेम्स'' बिलासपुर (ISSN-0975-8771) से शोध पत्र ''रविन्द्र त्यागी : साहित्य और लालित्य (पुरब खिले पलाश के विशेष संदर्भ में)'' प्रकाशित।
15. राष्ट्रीय जर्नल ''छत्तीसगढ़ विवेक'' भिलाई (ISSN-0972-9909) से शोध पत्र ''रामनारायण सिंह मधुर : व्यक्तित्व एवं व्यंग्य'' प्रकाशित ।

16. राष्ट्रीय जर्नल "शोध मंथन" मेरठ (ISSN-0976-5255) से शोध पत्र "महावीर अग्रवाल : व्यक्तित्व एवं व्यंग्य" प्रकाशित ।
16. राष्ट्रीय जर्नल "शोध मंथन" मेरठ (ISSN-0976-5255) से शोध पत्र "महावीर अग्रवाल : व्यक्तित्व एवं व्यंग्य" प्रकाशित ।
17. राष्ट्रीय जर्नल "एजुकेशनल वेम्स" से शोध पत्र "आशा रावत : व्यक्तित्व एवं कृतित्व" प्रकाशित ।
18. राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी अंबिकापुर में शोध पत्र वाचन।
19. राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी चाम्पा में शोध पत्र वाचन।
20. राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी एवं साहित्य शोध उत्सव पेंड्रारोड में शोध पत्र वाचन ।
21. राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी भोपाल में शोध पत्र वाचन।
22. राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी सीपत में शोध पत्र वाचन।
23. राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी गुना में शोध पत्र वाचन।
24. राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी हसौद में शोध पत्र वाचन।
25. राष्ट्रीय कार्यशाला जबलपुर में शामिल ।
26. राष्ट्रीय कार्यशाला बिलासपुर विश्वविद्यालय बिलासपुर में शामिल ।
27. राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी सीपत में शोध पत्र वाचन ।
28. राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी सीपत, चिरमिरी व भिलाई में शोध पत्र प्रेषित व स्वीकृत ।
29. अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी संत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय नागपुर (10, 11,12 जनवरी 2015) विषय–आज के सवाल और साहित्य में सम्मिलित ।

No. 3577775 / PS to PM / DISP / 2014

Rajeev Topno
Private Secretary to
the Prime Minister
Tel. : 23018939
Fax : 23016857

प्रधान मंत्री कार्यालय
नई दिल्ली–110011
PRIME MINISTER'S OFFICE
NEW DELHI - 110011

11 दिसम्बर, 2014

प्रिय डॉ. टण्डन,

प्रधान मंत्री जी को आपका 7 नवम्बर, 2014 का पत्र प्राप्त हुआ। आपके द्वारा भेंट स्वरूप पुस्तक भेजने के लिए वे आपको धन्यवाद देते हैं।

मंगलकामनाओं सहित,

भवदीय,

(राजीव टोपनो)

डॉ. रमेश टण्डन
ग्राम फूलबंधिया, पोस्ट सांडका
तह. खरसिया
जिला रायगढ
छत्तीसगढ़

फैक्स नं. –
प्रधानमंत्री कार्यालय– 011–23016857
प्रधानमंत्री निवास – 011–23018939

मेक इन इंडियाः मापदंड और पहल

पी. आर तिरोले
सेवानिवृत्त ग्रंथपाल
(संकलनकर्ता)

मेक इन इंडिया कार्यक्रम के तहत निवेश को बढ़ावा देने, बौद्धिक सुरक्षा के संरक्षण और सर्वश्रेष्ठ निर्माण की आधारभूत संरचना स्थापित करने के लिए कई कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की गई है । भारत के साथ व्यापार की नई प्रविधि में शामिल है : ईबिज पोर्टल के माध्यम से औद्योगिक लायसेंस और औद्योगिक उद्यमी मेमोरेण्डम के लिए ऑनलाईन आवेदन चौबीसों घंटे किए जा सकेगे, जो सेवाओं के लिए एकल खिड़की आई.टी. प्लेटफार्म मुहैया करायेगा । औद्योगिक लायसेंस की वैधता तीन साल के लिए बढ़ा दी गयी है । ब्वॉयलर अधिनियम के तहत राज्य सरकारों को कहा गया है कि वे स्व–प्रमाणन और तृतीय पक्ष प्रमाणन की प्रक्रिया शुरू करें, रक्षा उत्पादों के अधिकांश घटकों की सूची को औद्योगिक लायसेंस से बाहर कर दिया गया है । सैन्य और असैन्य दोनों तरह के उपयोग में आने वाली वस्तुओं को विनियमित कर दिया गया है । 31 दिसंबर 2014 केन्द्रीय सरकार के विभागों और मंत्रालयों को समन्वित कर दिया जायेगा । पर्यावरण मंजूरी की प्रक्रिया को ऑनलाईन कर दिया गया है । सभी विभागों और राज्य सरकारों को निर्देशिका प्रेषित की गई है कि वे नियमन वातावरण को सरलीकृत और तार्किक स्वरूप दें । एकीकृत फार्म के जरिए सभी दाखिलें ऑनलाईन होंगे । सभी जरूरी अनुकूलताओं की चेकलिस्ट मंत्रालय/विभागों के पोर्टल पर जारी की जायेगी सभी कार्यो के लिए अलग–अलग उपयोग में लाये जा रहे रजिस्टरों की बजाए एक ही इलेक्ट्रॉनिक रजिस्टर होगा । बगैर विभागीय प्रमुख की स्वीकृति के कोई निरीक्षण नहीं किया जावेगा । सभी गैर–जोखिम, गैर–खतरनाक व्यापार के लिए एक स्वप्रमाणन की प्रणाली काम करेगी।

हमारे अधीक्षक

रसीलो राठिया
बी. एससी. अंतिम वर्ष

महाविद्यालय की दांयी तरफ पोस्ट मैट्रिक कन्या छात्रावास 1998 ई. में स्थापित है । इसकी क्षमता 50 छात्राओं की है । हरे–भरे फूलों से आच्छादित छात्रावासीय परिसर में सभी सुविधाओं के साथ सब्जी वाटिका भी शोभायमान है । जब भी महाविद्यालय में कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल, एन.सी.सी का कार्यक्रम, नगर में गणतंत्र दिवस का कार्यक्रम होता है, हमारी प्यारी–सी अधीक्षिका सपना पाटले के निर्देशन में हम सभी छात्राएं हिस्सा लेती हैं । इसी तरह महाविद्यालय के पीछे 100 सीटर पोस्ट मैट्रिक बालक छात्रावास 1998 ई. से स्थापित है, जहाँ के होनहार छात्र पूरी लगन के साथ विभिन्न कार्यक्रमों में अधीक्षक आर.बी. बर्मन के निर्देशन में सहभागिता देते हैं । यह कहना सही होगा कि जब भी महाविद्यालय को कोई गौरव प्राप्त होता है तो वह दोनों छात्रावासों की बदौलत प्राप्त होता है ।

श्री आर. बी. बर्मन
अधीक्षक
पोस्ट मैट्रिक बालक
छात्रावास, खरसिया

श्रीमती सपना पाटले
अधीक्षिका
पोस्ट मैट्रिक कन्या
छात्रावास, खरसिया

स्त्री जागेगी तभी बात बनेगी

डॉ. श्रीमती रविन्द्र चौबे
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी साहित्य

नारी स्वयं शक्ति स्वरूपा है, तभी तो प्रकृति ने सृजन का महान दायित्व उसे ही सौंपा है । वसुन्धरा जैसी क्षमता, भास्कर जैसा तेज, सुधाकर जैसी शीतलता और पहाड़ जैसी मानसिक ऊँचाई एक साथ नारी हृदय में दृष्टिगोचर होती है । पुरूष जीवन की जन्मदात्री नारी माता बनकर जहॉ रक्षा पोषण का दायित्व निभाती है, वहीं भार्या बनकर मित्र और गुरू की तरह शुभ कर्मों के लिए प्रेरणा भी प्रदान करती है, किन्तु यह घोर आश्चर्य और पुरूष प्रधान समाज के लिए कलंक की बात है कि नारी वर्ग के प्रति उसका नजरिया शुरू से ही वैमनस्य युक्त रहा है । पुरूष समाज जिस कोख से जन्मा, जिस गोद में पला, जिस बाजू को पकड़कर जीवन युद्ध में कामयाबी पाई, उसे ही अंधेरी गुफा में धकेलकर अट्टहास भी किया ।

जन्म से लेकर मृत्यु तक भारतीय नारी तरह–तरह की उपेक्षाओं की शिकार है । असंतुलित लिंगानुपात, पोषक तत्वों की कमी, बालविवाह, स्वास्थ्य में गिरावट और उच्च प्रजनन दर के कारण भारत में महिलाओं की स्थिति गंभीर बनी हुई है । महिलाएं हिंसा का शिकार भी होती हैं । बाहरी क्षेत्र में होने वाले हिंसा, टकराव, दंगों और आक्रामक स्थितियों में की जाने वाली हिंसा, कार्य स्थल पर हिंसा, घरों में हिंसा आदि इसमें शामिल है । हमारे भारतीय समाज की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि स्त्रियों पर घरेलू हिंसा सबसे ज्यादा वे ही लोग करते हैं, जो उनके ज्यादा नजदीक होते हैं ।

करवा चौथ, भैया दूज और रक्षाबंधन जैसे नारी केन्द्रित पर्वों वाले इस देश में औरत को सबसे ज्यादा खतरा अपने परिवार के मर्दो से ही है । जानकारों का मानना है कि हमारे देश में लगभग 70 प्रतिशत महिलाएं घरेलू हिंसा का शिकार होती हैं । विवाह के बाद कभी दहेज के कारण , कभी पुत्रों के कारण स्त्री जुल्मों का शिकार होती हैं । प्रख्यात मानवाधिकारवादी फ्लेविया एग्रेस का मानना है कि प्रतिदिन औसतन 17 लड़कियॉ दहेज के कारण मरती है । हर तीस मिनट पर इस देश में बलात्कार की एक घटना होती है । वैश्याओं की तादाद बढ़ रही है । पति की संपत्ति में महिलाओं को अधिकार नहीं मिलता है। मुश्लिमों में विवाह भी अनुबंध है जो टूट जाये तो मेहर वसूलना कठिन हो जाता है । यदि किसी लड़की या महिला के साथ छल या भय से कोई यौन संबंध बनाता है तो उसे दंडित कराने के लिए धारा 354, 373, 376 (ए), 366, 493, 494, 495 और 507 के तहत पीड़िता को सिद्ध करना पड़ता है कि पूरे कर्म में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से वह सहभागी नहीं थी । यह न्यायालय में प्रतिवादी अपने कुतर्को और अपमानजनक टिप्पणियों से सिद्ध नहीं होने देता । वैवाहिक हिंसा के मामलों में भी औरत को इन्हीं कारणों से न्याय नहीं मिल पाता है ।

घरेलू हिंसा निरोधक कानून ने भारतीय नारी को पुरूषों के शोषण से बाहर निकालने का बेहतरीन मौका दिया है । पर उसके लिए महिलाओं को जागरूक होने की जरूरत है । जब तक वह परिवार और समाज की चेतनाशील नागरिक बनने का प्रयास नहीं करेगी, अपने पर होने वाली हिंसा से अपनी रक्षा नहीं कर सकती । हर हाल में स्त्री को यह समझना होगा कि मनुष्य होने के नाते वह समाज की अनिवार्य इकाई है, देश की सम्मानित नागरिक है । इसलिए यह बेहतर होगा कि स्त्रियॉ अपने आस–पास की जागरूक सामाजिक और स्वयंसेवी संस्थाओं से अपने को जोड़ें । वे अपने परिवार में रह कर कर्तव्यों का निर्वाह करें पर जुल्म और हिंसा बर्दाश्त करने की शर्त पर नहीं । इसके लिए ग्रामीण एवं शहरी इलाकों में स्त्री शिक्षा, स्वावलंबन और महिलाओं की एकजुटता के लिए लगातार काम करते रहने की जरूरत है । ❑❑❑

बेटी का भाग्य

सुश्री रचिता अग्रवाल
अतिथि प्रा. वाणिज्य

''भगवान् क्या लिख रहे हैं, इतनी देर से ? देवदूत ने सृष्टि के निर्माता के कक्ष में आते हुए कहा । भगवान् ने उसकी तरफ ध्यान दिए बगैर लिखना चालू रखा ।

देवदूत ने कहा – ''सो जाइये भगवान् कई दिनों से आपने तनिक भी विश्राम नहीं किया, क्या लिख रहे हैं आप ?

भगवान् – ''भाग्य''

देवदूत – ''किसका'' ?

भगवान् – ''है एक गाँव की लड़की, अभी कुछ ही महिनों में उसका जन्म होगा, उसी का भाग्य लिख रहा हूँ।''

देवदूत ने हँसकर कहा –''गाँव की लड़की, उसका भाग्य ?''

भगवान् ने क्रोधित होते हुए कहा– ''ये आम बेटी नहीं है, इसका भाग्य मैंने खुद लिखा है ।''

देवदूत ने कहा – ''ऐसा क्या भाग्य है इसका ?''

भगवान् – ''ये लड़की बहुत पढ़ेगी ।''

देवदूत ने कटाक्ष में कहा – 'गाँव में इसे कौन पढ़ने देगा ?''

भगवान् – ''ये खुद अपनी मेहनत से पढ़ेगी और अपने गाँव का नाम रोशन करेगी । अपने गाँव की एकलौती पढ़ी–लिखी लड़की पूरे गाँव में क्रांति लाएगी, पूरे समाज को सुधारेगी । देखना, फिर उस गाँव में कोई कम पढ़ा–लिखा न होगा । देश में बड़े–बड़े लोग इसके कार्य से प्रभावित होंगे । उसे उसके कार्य के लिए पुरूस्कार दिया जाएगा वो अपने माँ–बाप का नाम रोशन करेगी , समझो ये साक्षात् लक्ष्मी होगी । अपने माँ–बाप के सभी दुःख को दूर करेगी । उन्हें झोपड़ी से महलों तक ले जायेगी ।''

देवदूत ने कहा– ''पर क्या काम का, लड़की तो पराया धन होती है ? एक दिन ससुराल चली जाएगी, फिर ?

भगवान् ने कहा – ''ना, ना ये लड़की शादी के बाद अपने माँ–बाप को संभालेगी बल्कि जिस दिन उसका भाई इसके माँ–बाप को घर से निकालेगा उस दिन यही बेटी उनका सहारा भी बनेगी । उन्हें किसी बात का दुःख नहीं होने देगी।''

अचानक भगवान् बोलते – बोलते रूक गये । उनकी छाती में पीड़ा होने लगी ।

देवदूत ने उन्हें संभाला और कहा – क्या हुआ भगवान् ?

भगवान् की आँखों में आँसू थे – ''मेरी सारी मेहनत पानी में गई देवदूत !''

देवदूत – '' क्या हुआ ?''

भगवान् – ''अब वो बेटी जन्म नहीं लेगी ?''

देवदूत – ''क्यों भगवान् ?

भगवान् – ''उसके माँ–बाप ने उसे जन्म देने से पहले ही मार डाला ।''

देवदूत बुरी तरह चीखा – ''क्यों ..... ?

भगवान् – ''सुनो.... उनकी आवाज.... उन दुष्टों की आवाज... वो कहते हैं उन्हें बेटी नहीं बेटा चाहिए, बेटा चाहिए।

देवदूत – ये लोग क्यों ऐसा करते हैं, क्यों बेटियों को जन्म लेने से पहले ही मार देते हैं ..... क्यों देवदूत क्यों ?

देवदूत चुपचाप भगवान् की आँसुओं से कागज पर लिखे बेटी के भाग्य को बहता देखा रहा था ।

''बेटियाँ बचाइये''

□□□

ऑनलाइन टूल्स

प्रो. लोकेश शर्मा
अतिथि प्राध्यापक. रसायन
(संकलित)

इंटरनेट पर हमारे रोजमर्रा के काम को करने के लिए हमें कई सारे टूल्स की आवश्यकता पड़ती है, जिनको अकसर हम गूगल पर सर्च करते हैं, लेकिन अगर आंप इस पोस्ट को बुकमार्क कर लें तो आपको कई सारे टूल्स एक साथ मिल जायेंगे ।

Hindi Font Typing Tool

अगर आपको हिंदी टायपिंग नहीं आती है, लेकिन अकसर आपको टाइप करने की आवश्यकता होती है तो यह ऑनलाईन टूल आपके काम के हो सकते हैं ।

1. Google Input Tools
2. MS Indic Language Input Tools

Online Font Converter Utility

फॉन्ट कनवर्टर हम वहां पर करते हैं जहॉ आपको प्रमुख हिंदी फॉन्ट को अन्य प्रमुख फॉन्ट के रूप में बदलना हो, जैसे कृतिदेव से चाणक्य, कृतिदेव से यूनीकोड, कृतिदेव से मंगल इन हिन्दी फॉन्ट को आप अन टूल्स की मदद से आसानी से परिवर्तित कर सकते हैं –

1. Krutidev to Unicode
2. Kuridev to Mangal
3. Kuridev to Chanakya

Online OCR Tools

जहॉ हमें टाइप किये हुए या प्रिन्ट किये हुए पेज को टेक्स्ट में परिवर्तित करना हो वहॉ ओसीआर का यूज किया जाता है, इसके प्रयोग से आप किसी इमेज को भी वर्ड की फाइल में कनवर्ट कर सकते हैं –

1. Image to Text
2. Free OCR

Online PDF Tools

माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस से पीडीएफ और इमेज से पीडीएफ बनाने की जरूरतों को पूरा करने के लिए आप इन टूल्स का प्रयोग कर सकते हैं –

1. JPEG to PDF converter
2. Word to PDF

Online Image editor Tools

इमेज एडिटर या इमेज एडिटिंग सॉफ्टवेयर से आप किसी भी साधारण फोटो को बिना फोटोशॉप जाने भी अच्छा इफेक्ट दे सकते हैं, ऐसे बहुत ऑनलाअन इमेज एडिटर मौजूद हैं जो आपके इस काम को बहुत आसानी से कर सकते हैं, इनमें से कुछ हैं –

1. Online Photoshop
2. Fotor photo creatives

Online Translator

अगर आपको लैंग्वेज ट्रांसलेटर की आवश्यकता है तो आप इन दोनों लिंक प्रयोग कर सकते हैं, इसमें अंग्रेजी–हिंदी ट्रांसलेटर के अलावा और भी कई विदेशी भाषाओं को आसानी से ट्रांसलेट किया जा सकता है–

1. Google Translator
2. Bing Translator

Online free SMS

अगर आपके मोबाईल में एमएमएस बैलेंस खतम हो गया है तो दी गयी सर्विसेज का फायदा उठाकर फ्री एमएमएस भेज सकते हैं, इसके आलवा कुछ सर्विसेज ऐसी भी होती हैं जो फ्री एमएमएस के साथ–साथ ऑनलाईन फ्री रिचार्ज की सुविधा भी उपलब्ध करा रही है –

1. way 2 sms
2. Bollywoodmotion
3. A Free SMS

चोरी हुए या गुम हुए मोबाईल को ट्रैक करने के लिए अपना मोबाईल ट्रैकर का यूज कर सकते हैं –

1. Trackmobile
2. mobilenumbertracker

Online Word Editor

अपनी किसी ऑफिस डॉक्युमेंट्स को ऑनलाईन एडिट करने के लिए आन इन एडीटर्स का यूज कर सकते हैं, यह सेवायें आप फ्री यूज कर सकते हैं –

1. Google Docs
2. Document Editor

Online Spell check

स्पेल चेकर के द्वारा टायपिंग में की गई अशुद्धियों का पता लगता है तथा उनको सही करने में भी आपकी सहायता करता है –

1. Spellcheck 2. Spellcheckplus

हिन्दी का परिचय

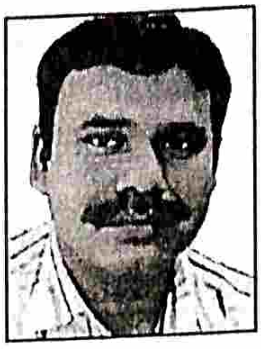

डॉ. रमेश टण्डन
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी साहित्य

कण्ठय	–	क, ख, ग, घ, ङ	अ, आ, ह,:
तालव्य	–	च, छ, ज, झ, ञ,	इ, ई, य, श
मूर्द्धन्य	–	ऋ, र, ष	
दन्त्य	–	त, थ, द, ध, न,	ल, स
ओष्ठय	–	प, फ, ब, भ, म,	उ, ऊ
कण्ठतालव्य	–		ए, ऐ
कण्ठोष्ठय	–		ओ, औ
दन्तोष्ठय	–		व

स्पर्श व्यंजन	–	'क' वर्ग से 'प' वर्ग	25
अन्तस्थ व्यंजन (अर्द्ध स्वर)	–	य, र, ल, व ————	04
उष्म व्यंजन	–	श, ष, स, ह ————	04
संयुक्त व्यंजन	–	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ————	04
द्विगुण व्यंजन	–	ड़, ढ ————	02
		कुल व्यंजन –	39
ह्रस्व स्वर	–	अ, इ, उ, ऋ ————	04
दीर्घ स्वर	–	आ, ई, ऊ ————	03
संयुक्त स्वर	–	ए, ऐ, ओ, औ ————	04
अनुस्वार	–	अं ————	01
विसर्ग	–	अः ————	01
		कुल स्वर –	13

कुल वर्ण ———— 39 + 13 = 52

विश्व के भाषा खण्ड – 04 प्रकार

01. अफ्रीका खण्ड – १. बुशमैन, २. बांटू, ३. सूडान, ४. हैमेटिक – सेमेटिक ।

02. यूरेशिया खण्ड – १. हैमेटिक – सेमेटिक, २. काकेशियन ३. यूराल–अल्टाईक, ४. चीनी, ५. द्रविड़, ६. ऑस्टो–एशियाटिक, ७. जापानी–कोरियाई ८. मलय–पॉलिनेशियन, ९. भारोपीय।

03. प्रशांत महासागरीय खण्ड – मलय–पालिनेशियन ।

04. अमरीका खण्ड – 100 अमरीकी परिवार ।

भारोपीय

01. केल्टिक (आयरिश, बेल्श)
02. इटैलिक या लैटिन (स्पेनी, पुर्तगाली, अतावली, फ्रेंच, ...)
03. जर्मनिक – १. पश्चिमी (जर्मनी, अंग्रेजी, डच, ...)
    २. उत्तरी (स्वेडिश, नार्वेजियन, आइसलैंडिक, ...)
04. ग्रीक या हेलेनिक,
05. हित्ती,
06. तोखारी,
07. इलीरियन,
08. बाल्टिक
09 स्लाव (रूसी चेक, बुलो., पोलिश, ...)
10. भारत–ईरानी – १. ईरानी (अवेस्ता, फारसी, पश्तो, ...) २. दरद,
    ३. भारतीय आर्य भाषा

भारतीय आर्य भाषा –

1. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा (१५०० ई. पू. से ५०० ई. पू.)
    1.1 वैदिक संस्कृत (वेदों की रचना)
    1.2 लौकिक संस्कृत (रामायण, महाभारत की रचना)
2. मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा (५०० ई. पू. से १००० ई.)
    2.1 प्रथम प्राकृत (पालि)
        (५०० ई. पू. से १ ई.)
    2.2 द्वितीय प्राकृत (प्राकृत)
        (१ ई. से ५०० ई.)
    2.3 तृतीय प्राकृत (अपभ्रंश)
        (५०० ई. से १००० ई.)
3. आधुनिक भारतीय आर्य भाषा (१००० ई. से अब तक)
    3.1 आदिकाल (९९३ ई. से १३१८ ई.)
    3.2 भक्तिकाल (१३१८ ई. से १६४३ ई.)
        3.2.1 सगुण भक्ति काव्य
            3.2.1.1 राम भक्ति शाखा
            3.2.1.2 कृष्ण भक्ति शाखा
        3.2.2 निर्गुण भक्ति काव्य
            3.2.2.1 प्रेमाश्रयी
            3.2.2.2 ज्ञानाश्रयी
    3.3 रीतिकाल (१६४३ ई. से १८४३ ई.)
    3.4 आधुनिक काल (१८४३ ई. से अब तक)

आधुनिक काल –

1. भारतेन्दु युग (१८४३ – १९०३)
2. द्विवेदी युग (१९०३ – १९८१)
3. छायावाद (१९८१ – १९१८)
4. प्रगतिवादी युग (१९१८ – १९४३)
5. प्रयोगवादी (१९४३ – १९५४)
6. नयी कविता (१९५४ – १९६४)
7. अकविता (१९६४ – अब तक)

अकविता के अन्य नाम –

साठोत्तरी कविता, समकालिन कविता, अभिनव कविता, युयुत्सावादी कविता, अस्वीकृत कविता, अति कविता, सहज कविता, निर्दिशायामी कविता ।

निबंध –

1. भरतेन्दु युग (१८६८ – १९०३)
2. द्विवेदी युग (१९०३ – १९२०)
3. शुक्ल युग (१९२० – १९३६)
4. शुक्लोत्तर युग (१९३६ – १९५०)
5. स्वातन्त्र्योत्तर युग (१९५० – अब तक)

उपन्यास –

1. पूर्व प्रेमचंद युग (१८८२ – १९१६)
2. प्रेमचंद युग (१९१६ – १९३६)
3. प्रेमचंदोत्तर युग (१९३६ – अब तक)

कहानी –

1. प्रारंभिक युग
2. प्रेमचंद युग
3. प्रगतिवादी युग
4. स्वातन्त्र्योत्तर युग

नाटक –

1. भारतेंदु युग
2. प्रसाद युग
3. प्रसादोत्तर युग (१९३६ – अब तक)

एकांकी –

1. भारतेंदु युग
2. द्विवेदीयुग (प्रथम उत्थान काल)
3. प्रसाद युग (द्वितीय उत्थान काल)
4. स्वातन्त्र्योत्तर युग (उत्कर्ष काल)

अपभ्रंश –

भोलानाथ तिवारी के अनुसार 07 भेद –

1. शौरसेनी – पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती ।
   (राजस्थानी एवं गुजराती, नागर अपभ्रंश हैं)
2. महाराष्ट्री – मराठी
3. अर्द्धमागधी – पूर्वी हिन्दी
4. मागधी – बिहारी, बंगला, उड़िया, असमिया ।
5. टक्क – केकय या पैशाची – पंजाबी, लहंदा

6. ब्राचड़ – सिंधी
7. खस – पहाड़ी

हिन्दी की उपभाषाएँ एवं बोलियाँ –

1. पूर्वी हिन्दी – अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
2. पश्चिमी हिन्दी – ब्रजभाषा, बॉगरू, खड़ी बोली, हरियानी, कन्नौजी, बुन्देली, ताजुज्बेकी, कौरवी, निमाड़ी
3. राजस्थानी – मारवाड़ी, जयपुरी, मेवाती, मालवी, हाड़ौती, किशनगढ़ी, अजमेरी, डिंगल, सौराष्ट्री
4. बिहारी – भोजपुरी, मगही, मैथिली, वज्जिका
5. पहाड़ी – कुमाऊँनी, गढ़वाली, पश्चिमी पहाड़ी

भाषा/बोली के अन्य नाम

हरियाणवी के अन्य नाम	–	बांगरू
खड़ी बोली के अन्य नाम	–	कौरवी
अवधी के अन्य नाम	–	कोशली, वैशबाड़ी
पाली के अन्य नाम	–	मागधी
टक्क–कैकय के अन्य नाम	–	पैशाची

हिन्दी भाषा क्षेत्र

1. 'क' श्रेणी–हिन्दी क्षेत्र – हिन्दी का प्रयोग, यदि अंग्रेजी हो तो साथ में उसका हिन्दी अनुवाद भी होगा ।
   – 10 राज्य – हिंमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड, राजस्थान, मध्यप्रदेश
2. 'ख' श्रेणी–हिन्दी या अंग्रेजी –
   – 05 राज्य – पंजाब, चंडीगढ़, गुजरात, महाराष्ट्र, अंडमान और निकोबार ।
3. 'ग' श्रेणी–सिर्फ अंग्रेजी– बाकी सभी राज्य ।

□□□

– स्वाइन फ्लू से बचें –

यह एक संक्रामक रोग है जो कि एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में छींकन, खांसने से फैलता है। इसके लक्षण हैं –

- **बुखार आना**
- **खांसी**
- **सिर दर्द होना**
- **थकान महसूस होना**
- **गले में दर्द**
- **शरीर में दर्द**
- **ठंड लगना**
- **उल्टी लगना**
- **दस्त होना**
- **नाक बहना**
- **भूख नहीं लगना**

- **हेल्प लाइन नं. – 0771–2890113, 2890081**

पर्यटन उद्योग में संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ

छ.ग. के संदर्भ में

प्रो. मनोज कुमार साहू
सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य

छत्तीसगढ़ एक हरीतिमा युक्त प्रदेश है । यहॉ साल के घने वनों के बीच जलप्रपातों की अविरल जल राशि मनोरम दृश्य प्रस्तुत करती है । घनें वनों के बीच निर्भय विचरण करते हुए वन्य जीव, पर्यटकों को आकर्षित एवं प्रफुल्लित करते हैं ।

छत्तीसगढ़ में पर्यटन की वास्तविक स्थिति :–

छत्तीसगढ़ में पर्यटन की विपुल संभावनाओं के बावजूद यहॉ देशी एव विदेशी पर्यटकों की भीड़ नहीं जुट पा रही है । पर्यटन व्यवसाय से जुड़े अन्य व्यवसायों में अपेक्षाकृत वृद्वि नहीं हो पायी है ।

छत्तीसगढ़ में पर्यटन संभावनाएँ :–

छत्तीसगढ़ में भविष्य में पर्यटन व्यवसाय के लिए असीम संभावनाएँ हैं, क्योंकि –

(1) राज्य देश के मध्य में स्थित होने तथा सड़क, रेल, वायु मार्ग से जुड़े होने के कारण यहॉ आसानी से पहुँचा जा सकता है । प्रदेश में 11 राष्ट्रीय राजमार्गों की कुल लंगाई 2225 किमी है, इसके अतिरिक्त राजमार्ग, जिला मार्ग एवं अन्य ग्रामीण मार्गों की लंबाई 33000 किमी. से भी अधिक है । यहॉ 1108 किमी रेलमार्ग के साथ बिलासपुर शहर दक्षिण–पूर्वी मध्य रेल का जोन मुख्यालय है । प्रदेश में विवेकानंद एयरपोर्ट माना के अतिरिक्त 9 हवाई पट्टियॉ हैं।

(2) प्रदेश का 44.5 प्रतिशत भू–भाग वन आवेष्ठित क्षेत्र है । यहॉ 3 राष्ट्रीय उद्यान एवं 11 वन्य जीव अभ्यारण्य है । इनमें बाघ, तेन्दुआ, वनभैंसा, पहाड़ी मैना, चीतल, बारहसिंघा एवं मोर के दर्शन किये जा सकते हैं।

(3) यहॉ देश के सबसे चौड़े जल–प्रपात "चित्रकोट" के अतिरिक्त तीरथगढ़, अमृतधारा, मलाजकुन्डम, रक्सागण्डा, रजपुरी, केंदाई एवं शरजभन्जा आदि जल–प्रपात हैं ।

(4) यहॉ प्राकृतिक गुफाओं में कुटुमसर गुफा, स्टेलेग्माईट एवं स्टेलेक्टाईट चट्टानों के लिए प्रसिद्ध है । इसके अतिरिक्त रामगढ़ की गुफाएँ, सिंघनपुर एवं कबरा की गुफाएँ शैल चित्रों के लिए प्रसिद्ध है ।

(5) यहॉ पुरातात्विक महत्व के भोरमदेव, सामतसरना, सिरपुर एवं मल्हार के मंदिर हैं । भोरमदेव को छत्तीसगढ़ का खजुराहो कहा जाता है । धार्मिक दृष्टि से राजिम, शिवरीनारायण, रतनपुर, गिरौदपुरी के मंदिर हैं ।

चुनौतियॉ :–

राज्य के उत्तरी एवं दक्षिणी क्षेत्रों में घने वन एवं पहाड़ी स्थलों में आवागमन के साधनों एवं अच्छे मार्गों का अभाव है । बस्तर क्षेत्र में नक्सली आतंक भी पर्यटकों को भयभीत करता है । पर्यटकों के विश्राम के लिए शहरों में ही अच्छे होटल उपलब्ध हैं । पर्यटन क्षेत्रों में रिसार्टस् एवं विश्रामगृह पर्याप्त मात्रा में बनाए जाने की आवश्यकता है । पर्याप्त पर्यटन वाहनों एवं टूर आपरेटर्स सेवाओं की भी आवश्यकता है ।

राज्य सरकार द्वारा आयोजित राजीम कुंभ, मल्हार उत्सव, भोरमदेव उत्सव एवं रामगढ़ उत्सव से पर्यटन उद्योग का प्रचार हो रहा है । पर्यटन की आधारभूत सेवाओं की उपलब्धता में प्रयास किये जाने से भविष्य में पर्यटन उद्योग राज्य में विकसित होगा ।

□□□

राष्ट्रीय एकता एवं जातिवाद

प्रो. श्रीमती तृप्ति शुक्ला
अतिथि सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र

संगठन ही सभी साहित्यों का आधार है । संगठन के बल पर बड़े से बड़े कार्य भी पूर्ण किये जा सकते हैं । संगठन का ही एक रूप एकता है । एकता के बल पर बलवान शत्रु को भी पराजित किया जा सकता है । एकता का मूल मंत्र अनुशासन और आपसी सहयोग की भावना है । वर्तमान समय में देश में अनुशासन तथा आपसी सहयोग के वातावरण की अति आवश्यकता है । देशवासियों से निवेदन है कि वे अपने पूर्वजों के समान ही एकता के सूत्र में बंध जाये क्योंकि सही मायने में देश की उन्नति, आपकी अपनी उन्नति है । अपनी स्वतंत्रता और एकता की रक्षा के लिए हमें सख्त प्रयत्न करना चाहिए, जिससे हम स्वतंत्रता की खुली हवा में सदा साँस लेते रहें । शत्रु–पक्ष पर कठोर दण्ड नीति लागू की जानी चाहिए । आज सभी संगठनों को मिलकर राष्ट्रीय एकता के लिए प्रयास करना चाहिए ।

राष्ट्रभक्ति एक ऐसा भाव है, जो आपके अंदर से पैदा होना चाहिए । एक ऐसी सोच जो आपको अपना सबकुछ बलिदान करने के लिए प्रेरित करें । अपने राष्ट्रीय दिवसों पर भले ही देशभक्ति के गीत गाकर, देशभक्ति के नाम पर हम शोर–शराबा कर लें, हकीकत यही है कि हमारी देशभक्ति की भावना एक क्षणिक जोश और उत्साह के बाद तिरोहित हो जाती है ।

आज राष्ट्र को स्वतंत्र हुए 67 वर्ष हो चुके हैं पर अफसोस है कि देश की स्वतंत्रता के बाद हम सब राष्ट्रीय एकता के सबक को भूल बैठें हैं, जो कि हमारा पहला धर्म होना चाहिए था। यह एक अजीब विडम्बना है कि दुनिया को धर्म का मर्म सिखाने वाला राष्ट्र आज खुद धर्म के अर्थ से अनभिज्ञ है ।

परम्परावादी भारतीय समाज अनेक जातियों में बँटा हुआ है। भारत में राजनीतिक आधुनिकीकरण के प्रारंभ होने के पश्चात् यह धारणा विकसित हुई कि पश्चिमी ढंग की राजनीतिक संस्थाएं और लोकतंत्रात्मक मूल्यों को अपनाने के फलस्वरूप जातिवाद का भी अंत हो जायेगा, किंतु स्वाधीन भारत की राजनीति में जाति का प्रभाव अनवरत रूप से बढ़ता ही गया ।

जाति प्रथा संसार के हर कोने में किसी न किसी रूप में पायी जाती है, परतुं जातियॉ भारत वर्ष में सामाजिक कुरीति के रूप में भारतीय समाज की विशेषता बन गयी है । जाति की समस्या कोई एक धर्म की विशेषता नहीं है वरन् यह इस्लाम और इसाई धर्म में भी पायी जाती है । यह व्यवस्था एक अति प्राचीन व्यवस्था रही है । इसका अभिप्राय पेशे के आधार पर समाज को कई भागों में बॉट देना है । शुरू–शुरू में जाति प्रथा के बंधन कठोर न थे और वह जन्म पर आधारित न होकर कर्म पर आधरित थे । बाद में जाति प्रथा में कठोरता आती गयी, वह पूरी तरह जन्म पर आधारित हो गयी तथा एक जाति से दूसरी जाति में अंतःक्रिया असम्भव हो गयी । अपने मौलिक रूप में जातिप्रथा उपयोगी थी । चूंकि वह श्रम विभाजन के सिद्धांत पर आधारित थी, अतः उसने आर्थिक क्षेत्र में निपुणता के तत्व का समावेश किया । एक जाति का पेशा उसी जाति में होता था । बेटा बाप से अपना पुश्तैनी पेशा सीखता था और प्रायः उसी को अपनी आजीविका के साधन के रूप में अपना लेता था । इस प्रथा ने एक जाति और बिरादरी के लागों में भाई–चारे की भावना को बढ़ाया । एक जाति के लोग एक–दूसरे से भलि–भॉति परिचित होते थे तथा एक दूसरे के सुख–दुख में काम आते थे ।

□□□

PARADISE LOST

Critical & Autobiographical Approaches

Pro. Shuchilagna Tripathi
Guest Asstt. Pro. English

John Milton , a great poet and triumph of puritanism wrote Paradise Lost, probably the first epic of English Literature and legend of the Age of Milton. Milton wanted to make glorious art out of the English Language the way the other epic had done for their languages not only must a great epic be long and poetiecally well constructed its subject must be significant and original, its form strict and serious, and its aims noble and heroic.

Paradise lost was a Production of Milton's old age. It was written by the belind scholar closely identified with the defeated cause and "fallen on evil days". It was also the fruit of a lifetime's labour and concentrated study. Thought suffering from blindness he has witnessed all the realities of life. Milton opens Paradise Lost by formally declaring his poem's subject humankind's first act of disobedience toeard God, and the consequences thhat followed from it. The act is Adam and and Eve's eating of the forbidden fruit of the tree of knowledge. as told in Genetics, the first book of the Bible.

Milton indirectly announces that he wants to be inspired with this sacred knowledge because he wants to show his felloman that the fall of humankind into sin and death was part of God's greater plan, and that God's plan is justified.

Paradis Lost deals with the rebellion of the angels, the creation the temptation of man, and fall. The subject matter of the poem is taken partly from the books of Old Testment of The Bible. The effect produced by the ""Vistas and Avenues"of Milton's verse has been described as a feeling of speciousness such as no other poet gives. He can make us feel in a few words.

Who would lose,

thought full of pain,

this intellectual being,

These thoughts that wander through enternity ?

Paradis Lost in the product of a puritan's prolonged meditation on the Bible. The Biblical story of Adam Eve, teir temptation by the serpent and their loss of innocence and perfect happiness, prosesses the university of a myth. Milton's Godconsidered as a literary character is unforunately tinged with the narrow and literal theology of the time.

Quite a number of scholars have treated this epic as Milton's spritual autobiography, and have searched for personal information in it. In its tragic theme, its pessimestic viewof world history, and its assumption that the ways of God really require justification, these scholars perceive of poet's old age and the evil days on which he had fallen. In theirs eyes the poem is Milton's personal attempt to reconcile his religious trust in providence with meaningless realities-his blindness and public disgrace,and the failure of God's own cause (the cause, that is of , freedom). In the story of Adam's fall, they find a close parallel to the

defection of the poet's country man ; both fell through folly, betraying themeless, their maker, and their descendants both rashly threw away an earthly paradise. Milton's apparent perference for vague, and general imagery, instead of concrete visual detail, has been tregarded by critics like saintsbury and T.S. Eliot as literary symptoms of Milton's physical blindness. Otheres have discovered certain features of Milton's first wife, Mary Powell, in Eve. Satan, the arch rebel, has often been regarded as a self-portrail of Milton (the opponent of the king's execution). Adam's love story is happier than his creation for his Eve was, until she ignored the drowny fruit, all that he could have wished in a wife more like the true transient Katherine Woodcock than poor Mary Powell, in "those thousand decencies" which indicated union of mind. She spoke, too very properly, pointing out that she enjoyed for the happier lot, having a consont so greatly superior to his, even if she was, nicer looking.

" At which our first father

Smiled with Superior love ....

and pressed her Matron lip

with kisses pure"

I was, infect at first a thoroughly happy marriage ; and it was not untill the affair of the fruits that passion dragged his descended. It was after the fall that Adam deplored woman and gave his views on marriage, putting into verse passage from the diverse tracts and bewailing the " disturbances on earth through female snares." However, Eve seeking pardon, was partially forgiven, even as Mary had been ; though her spouse's words do not appear to offer hope for a much happier conjugal life in the future than was enjoyed by the ill-matched inheritors of his woe.

The poet's stormy egoism finds expression in almost all creatures fo his imagined universe. In turn he is the hectoring Almighty; the conjugal loquacious, superior Adam, the informative, admonoshing, shattering, heartily eating, amorous, passion-disapproving angel Raphael; the austerer Michael, coming to prophesy the truth about the world and to exact penalties; the rebellious Satan who will brook no restraint. He is only I think, not to be discerned in the fectness, erred, adorning Eve.

On the whole it is necessary to recognize the limitations of the biographical approach to Paradise Lost. It has to remembered for instance, that most of the tragic features of Milton's epic had been present in his youthful plans for a tragic drama on the same subject. A pessimistic outlook for the world, along with an optimistic promises of salvation, has been set forth in the New Testament, and was already available to Milton. The justification of God's ways had preoccupied the author of The Book of Job. As for the imagery, It was conditioned by the requirements of the high style ; it can be paralleled in other Renaissance artists who consciously sought elevation in style and design by subordinating particular details to general effects for the sake of organic unity. In such cases, the image appears vague only when detached in its context, as a part of the whole, it usually adds to the clarity of the general idea.

❑❑❑

मंजिल इंसान के हौसले को आजमाती है,
सपनों के पर्दे आँखों से हटाती है ।
किसी भी बात से हिम्मत मत हारना,
ठोकर ही इंसान को चलना सिखाती है ।

मानव जीवन में शिक्षा का महत्व

शुभ वचन :

''श्रद्धा ज्ञान देती है
नम्रता मान देती है
एवं योग्यता स्थान देती है ।।''

प्रो. बी. एल. कुर्रे
अतिथि प्राध्यापक, अर्थशास्त्र

मानव जीवन संसार में समस्त जीवों में श्रेष्ठ माना गया है । लेकिन मानवी जीवन में शिक्षा एवं ज्ञान वृत्ति से बढ़कर कोई स्थान नहीं है। क्योंकि शिक्षा से ही मनुष्य के चहुमुखी विकास संभव है क्योंकि शिक्षा ही मानव जीवन का दर्पण है ।

हमें मनुष्य जीवन मिलता है यह मजबूरी नहीं गौरव की बात है । बहुत सारे लोगों का जीवन बीत जाता है और वे अपने इंसान होने की गरिमा को स्पर्श नहीं कर पाते, उनकी क्रिया ही नही विचार एवं वाणी भी नपुंसक रह जाते हैं। उनकी भूमिका स्थापित होना तो दूर वे धरती पर ही बोझ रह जाते हैं । परिवार, समाज, राष्ट्र व निजी जीवन में हमारी सक्रियता हो और वह भी जीवन अस्तित्व के साथ हो इसके लिए जीवन में चार बातों का सन्तुलन जरूरी होगा– शिक्षा, स्वास्थ्य, धन और सहयोग । ये चारों संतुलित होकर जीवन में उतरने पर इच्छाशक्ति को जन्म देते हैं । इच्छा शक्ति केवल लक्ष्यपूर्ति का काम ही नहीं आती उसकी भूमिका विवशता, चिन्ता और शिकायत चित्त को समाप्त करने की वृत्ति भ्रष्टाचार जैसा ही अपराध को जन्म देती है , इसलिए हर एक को अपने योगदान की पृष्ठभूमिका तय करनी होगी ।

निजहित और परिवार पालन के दायरे से बाहर आकर अपने योगदान को स्थापित करना भी एक पूजा है ।

इसी शिक्षा की महत्ता को रेखांकित करते हुए भारत के सर्वोच्च पुरूस्कार भारत रत्न से सम्मानित रवीन्द्रनाथ टेगोर ने कहा कि ''एक दीपक दूसरे दीपक को तभी प्रकाशमय कर सकता है जब वह स्वयं प्रकाशमय हो।'' संसार में आए है तो हमें अपनी उपयोगिता को हर क्षेत्र में साबित करना होगा । परिवार में यदि हम पालक हैं तो दायित्व बोध सिद्ध किया जाय । यदि संतान की भूमिका है तो सेवा भाव हमारी प्राथमिकता हो ।

अनमोल वचन

- अपनी विद्वता पर गर्व करना सबसे बड़ा अज्ञान है।
- जब तक सफल न हों नींद चैन को त्यागो। संघर्ष एक चुनौती है मैदान छोड़कर मत भागो।
- प्रसन्न और मधुर व्यक्ति सदैव सफल होते हैं।
- गलती करने पर उसे छिपाये नहीं वर्ना अपराध हो जायेगा।
- शिक्षा कभी व्यर्थ नहीं जाती, समय आने पर वह अपना प्रतिफल देकर जाती है।
- मदिरा का सेवन करना कितनी बड़ी मूर्खता है कि अपना रूपया खर्च करके बेहोशी और बदनामी हाथ लगती है।
- यह एक मनोवैज्ञानिक नियम है कि आप अपने मन में जैसे विचार अधिक समय तक बार-बार दोहराते रहेंगे वैसे ही आपका शरीर और मनोमस्तिष्क बन जायेगा। तत्पश्चात् संकल्प विकसित होने लगेंगे। आपके जैसे संकल्प होंगे वैसा ही भाग्य बनेगा। अतः सदैव शुभ विचारों और संकल्पों को बार-बार दोहराएं। अशुभ विचारों भावों के आते ही उसे मन मस्तिष्क से विदाकर दीजिए।

अतः– *Learn*

- ''मनुष्य अपने लिए नहीं जीता वह किसी दूसरे के लिए जीता है। जो अपने लिए जीता है वह मरा हुआ इंसान के समान है।''
- ''जो जैसा करता है वह वैसा ही बन जाता है।''
- ''जीवन का अर्थ है - समय, जो जीवन से प्यार करते हैं वे समय को व्यर्थ न गवांये।''
- ''समस्त सफलताएँ मनुष्य के कर्म के नींव पर आधारित होते है।

□□□

संकलनकर्ता
प्रो. बी. एल. कुर्रे
अतिथि व्याख्याता, अर्थशास्त्र

एन.सी.सी.

प्रो. सरला जोगी
एन.सी.सी.अधिकारी

28 सी.जी. बटालियन एन.सी.सी. रायगढ़ की एक इकाई 1967 से महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, खरसिया में संचालित है । प्रो. दुबे, क्रीड़ाधिकारी श्री एम.डी. वैष्णव, डॉ. रमेश टण्डन के एन.सी.सी अधिकारी के रूप में बीते कार्यकाल में कई कैडेटों ने एन.सी.सी. के आधार पर सुरक्षा सेवा से जुड़े विभिन्न पदों को हासिल किया है । यह महाविद्यालय के लिए गौरव की बात है । वीरेन्द्र बघेल, मंजू सारथी ने थल सैनिक शिविर दिल्ली में छत्तीसगढ़ का नाम रौशन किया । पिछले सत्र 2013–14 में डॉ. रमेश टण्डन के नेतृत्व में सीनियर अंडर ऑफिसर सागर सिदार, ज्योतिसिंह, चेतनात्मक राठौर, ललिता सिदार आदि कैडेटों ने सागर, मैहर के शिविरों में भाग लिया । गीतांजली जोशी, कलेश्वरी सिदार राष्ट्रीय एकता शिविर काकीनाड़ा (आंध्रप्रदेश) में भाग लिया । गीतांजली जोशी ने सागर के शिविर में अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन किया । घनश्याम टंडन, दौलतराम दिनकर, विकास बघेल, सुनीता टंडन, गीतांजली जोशी ने रायपुर स्थित शिविर में भाग लिया वर्तमान सत्र में सितंबर 2014 से एन.सी.सी. अधिकारी के रूप में प्रो. श्रीमती सरला जोगी कार्यरत हैं । एन. सी. सी. अधिकारी प्रो. सरला जोगी के निर्देशन में इस वर्ष एन. सी. सी. दिवस पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया इस अवसर बहुत सी प्रतियोगिताएं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति हुई । एन. सी. सी. कैडेट्स ने स्वच्छ भारत अभियान पर महाविद्यालयीन परिसर और महात्मा गांधी चौक खरसिया की सफाई की। इस वर्ष 52 की कुल दर्ज में वर्तमान में 45 कैडेट प्रशिक्षणरत है, इसके सीनियर अंडर ऑफिसर भरत डेंजारे हैं । प्रो. श्रीमती सरला जोगी की मंशा है कि इस वर्ष एवं आने वाले वर्षों में एन. सी.सी. इकाई, खरसिया अपनी बुलंदियों को छुएगी

❑❑❑

अमित लहरे
आर डी सी भिलाई

सागर सिदार
पूर्व सीनियर अंडर ऑफिसर

भरत डेंजारे
वर्तमान सीनियर अंडर ऑफिसर

सत्यप्रकाश डेंजारे
आर डी सी भिलाई

राष्ट्रीय सेवा योजना की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

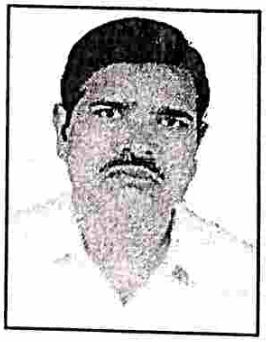

प्रो. एम. एल. धिरही
कार्यक्रम अधिकारी, रा. से. यो.
सह प्राध्यापक, इतिहास

राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र–छात्राओं में सामाजिक चेतना, अनुशासन की भावना का विकास एवं श्रम के प्रति गरिमा का भाव जागृत करने की दृष्टि से 1969 में प्रारंभ किया गया । यह संयोग ही रहा कि वर्ष 1969 राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी का शताब्दी वर्ष भी था । संपूर्ण भारतवर्ष में 1969 में मात्र 40 हजार स्वयं सेवक थे । 1988 तक यह संख्या 8 लाख तक पहुँच गयी । आज संपूर्ण भारत वर्ष में 29 लाख छात्र–छात्राएं स्वयं सेवक राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़कर समाज सेवा के माध्यम से "व्यक्तित्व का विकास" के लक्ष्य को प्राप्त कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ राज्य में 92 हजार विद्यार्थी योजना से जुड़ चुके हैं । राष्ट्रीय सेवा योजना की आवश्यकता और उसकी उपादेयता को लोग समझने लगे हैं । युवा छात्रों के जीवन की वास्तविकता को समझने की जागरूकता आयी है । वे जनता की कठिनाई को अच्छी तरह समझने लगे हैं तथा उनको विश्लेषण करने लगे हैं । इस प्रकार राष्ट्रीय सेवा योजना शिक्षा को समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने में ठोस प्रयास है ।

राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रतीक पुरूष युवा हृदय स्वामी विवेकानंद जी हैं । वे युवाओं के आदर्श हैं । इनके सिद्धांत वाक्य "मुझको नहीं तुझको" में प्रजातांत्रिक ढ़ंग से सबको रहने का सार है । राष्ट्रीय सेवा योजना के बैच का प्रतीक चिन्ह उड़ीसा के कोणार्क मंदिर के रथ के चक्रपर आधारित है । स्वयं सेवक इस बैच को समाज सेवा के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेते समय लगाते हैं । बैच में जो लाल रंग है वह उर्जा, उत्पाद सक्रियता का प्रतीक है । गहरा नीला रंग ब्रह्माण्ड की ओर संकेत कर राष्ट्रीय सेवा योजना को उसका एक छोटा अंश बतलाता है जो मानव मात्र के कल्याण में हर क्षण तत्पर रहता है ।

राष्ट्रीय सेवा योजना का लक्ष्य है समाज के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास । रा. से. यो. का विशिष्ट उद्देश्य है– शिक्षा के द्वारा सामुदायिक सेवा, सामुदायिक सेवा के द्वारा शिक्षा । रा. से. यो. का सामान्य उद्देश्य है :–

1. लोगों के साथ मिलकर कार्य करना ।
2. स्वयं को सृजनात्मक व रचनात्मक कार्यों में प्रवृत्त करना ।
3. स्वयं तथा समुदाय की ज्ञान वृद्धि करना ।
4. समस्याओं को कुछ न कुछ हल करने में स्वयं की प्रतिभा का व्यवहारिक उपयोग करना ।
5. प्रजातांत्रिक नेतृत्व को क्रियान्वयन करने में दक्षता प्राप्त करना ।
6. स्वयं को रोजगार पाने के योग्य बनाने के लिए कार्यक्रम विकास में दक्षता प्राप्त करना ।
7. शिक्षित और अशिक्षितों के बीच की दूरी को मिटाना ।
8. समुदाय में कमजोर वर्ग की सेवा के लिए स्वयं में इच्छाएं जागृत करना ।

इस योजना के कारण लाभार्थी राष्ट्रीय सेवा योजना का स्वयं सेवक होता है । सामुदायिक सेवा के माध्यम से छात्र–छात्राओं में व्यक्तित्व के गुण का विकास होता है । उनमें छिपी अनेक प्रतिभाओं को निखारने का अवसर प्राप्त होता है । कार्यक्रम आयोजन एवं प्रकाशन से, अनुशासन की सीख मिलती है आत्म विश्वास बढ़ता है तथा उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है ।

रा.से.यो. में दो प्रकार की गतिविधियां होती है एक अनिवार्य तथा दूसरा रचनात्मक गतिविधि । इसे नियमित गतिविधि एवं विशेष शिविर में भाग लेकर पूर्ण किया जाता है । नियमित गतिविधि संस्था परिसर, आसपास के ग्रामीण इलाके, गोद ग्राम में संचालित की जाती है । विशेष शिविर के तहत संस्था स्तरीय 7 दिवसीय शिविर, जिला स्तरीय, राज्य स्तरीय नेतृत्व प्रशिक्षण शिविर तथा राष्ट्रीय स्तर के विशेष शिविर गणतंत्र दिवस परेड में स्वयं सेवक को भाग लेने का अवसर दिया जाता हे । वहाँ श्रेष्ठ स्वयं सेवक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल कर सकता है ।

दो वर्षो से निरंतर कार्य करते हुए 240 घंटे की सेवा पूर्ण करने वाले स्वयं सेवकों को 10+2 हायर सेकेण्डरी स्तर पर 'ए', स्नातक स्तर पर 'बी' तथा स्नातकोत्तर स्तर पर 'सी' सर्टिफिकेट विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किया जाता है ।

राष्ट्रीय सेवा योजना के अपने प्रेरक उद्बोधन, युवा गीत हैं जो स्वयं सवकों के भीतर उत्साह पैदा करते उनका मनोबल बढ़ाते हैं । इस प्रकार राष्ट्रीय सेवा योजना विद्यार्थियों को अपने आस–पास की मानवीय प्रकृति का अनुभव कराती है तथा उन्हें देश का अच्छा नागरिक बनने में सहायता प्रदान करती है ।

□□□

Sagar Sidar
B. A. III

FLOW CHART - BOOK SEARCH

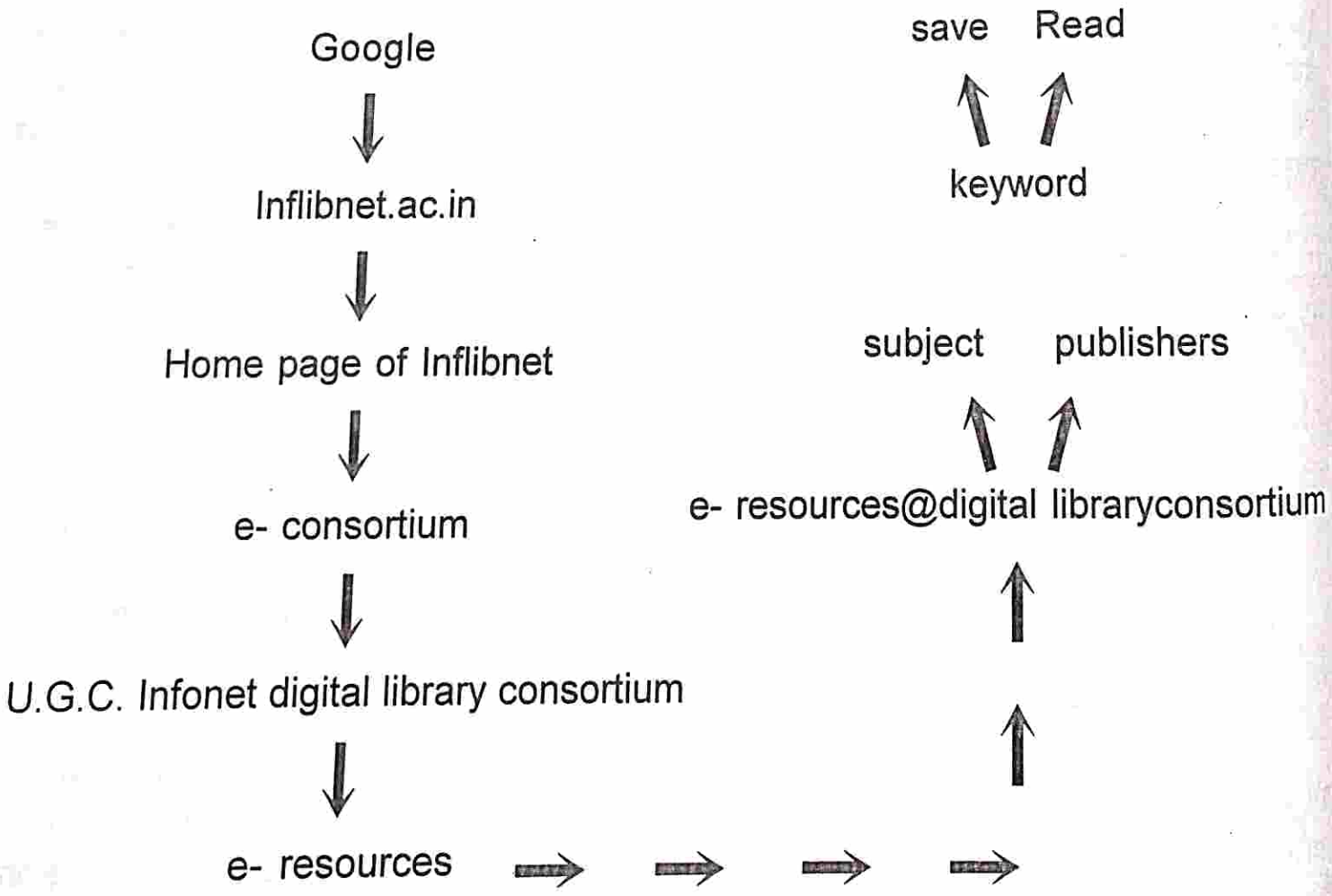

खेल–खास

डॉ. रमेश टण्डन
(प्रभारी क्रीड़ाधिकारी)
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी साहित्य

सन् 2014 में खेल विभाग में एक नया परिवर्तन आया, पिछले कई दशकों से नियमित क्रीड़ाधिकारी, श्री एम डी. वैष्णव ने खरसिया की खेल प्रतिभा को निखारा, संवारा । परंतु 30 नवंबर 2013 को उनकी सेवानिवृत्ति के बाद यह सौभाग्य मेरे कंधों पर आया तो इस वर्ष भी पूरे महाविद्यालयीन परिवार के सहयोग से खेल को पूरी बुलंदी के साथ राज्य स्तर व विश्वविद्यालय स्तर की प्रतियोगिता तक पहुँचाने की कोशिश की गई । इस वर्ष कबड्डी (महिला) में खरसिया कॉलेज से 05 छात्राओं– कु. गायत्री राठिया, रामप्यारी राठिया, संगीता राठिया, ललिता राठिया, रजनी यादव ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता रायपुर में हिस्सा लिया । व्हॉलीबाल (पुरूष) में सागरदास महंत ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता कोटा में भाग लिया । क्रिकेट की दुनिया में भी इस कॉलेज से माजिद अली, आकाश कुमार सिदार व सागर सिदार ने राज्य स्तर पर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया । यह महाविद्यालय पहली बार फूटबॉल में अपनी सहभागिता दर्ज कराते हुए छात्र हिमांशु सिंह राजपूत व कुशलकुमार यादव को राज्य स्तरीय बिलासपुर के लिए भेजा । खो–खो महिला में रामप्यारी राठिया, गायत्री राठिया, रजनी यादव, संगीता राठिया, रसीलो राठिया ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में हिस्सा लिया । इन्हीं में से खेल की दुनिया की होनहार बालिका रामप्यारी राठिया ने विश्वविद्यालय स्तरीय प्रतियोगिता दरभंगा में महाविद्यालय खरसिया का नाम रोशन किया । खो–खो (पुरूष) में अनिलराज सिदार, सिंगराम राठिया, रूपेन्द्र कुमार राठिया, दीपक कुमार राठिया ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता अभनपुर में हिस्सा लिया । एथेलेटिक्स (पुरूष/महिला) में सबसे अधिक इसी महाविद्यालय से राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए अनिलराज सिदार, मनोजकुमार सिन्हा, दिनेश कुमार राठिया, लेखराम राठिया, राजकुमार यादव, सागर सिदार, सत्यप्रकाश डेंजारे, मनोज चौहान, कमलेश नायडू, रामप्यारी राठिया, गायत्री राठिया, संगीता राठिया, पूजा केंवट, रसीलो राठिया, महेश्वरी राठिया का चयन हुआ। इसमें मनोजकुमार सिन्हा जिला स्तरीय प्रतियोगिता में 100मी दौड़, 200मी. दौड़ व लंबी कूद में प्रथम स्थान हासिल करते हुए चैम्पियन का खिताब हासिल किया । मैंने पूरे महाविद्यालय के अधिकारी, कर्मचारी व छात्रों के सहयोग से इस वर्ष कबड्डी (महिला) व एथलेटिक्स (पुरूष एवं महिला) के जिला स्तर का आयोजन कराया। कबड्डी (पुरूष) में भी इस महाविद्यालय से अशोक कुमार गबेल का राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयन हुआ।

इस महाविद्यालय के लिए यह बहुत बड़ी उपलब्धि है कि इस वर्ष मेरे दिशा निर्देशन में खरसिया के छात्र/छात्रा खिलाड़ी जिला स्तरीय प्रतियोगिता में कबड्डी (महिला), खो–खो (महिला), खो–खो (पुरूष) में विजेता रहे ।

पूरे जिले में हमारे महाविद्यालय का खेल संबंधी यह स्तर गौरव की बात है । पूरे खेल के दौरान हमारे छात्रों को सीनियर एवं खेल से जुड़े छात्रों का पूरा सहयोग प्राप्त होता रहा है, वे इन्हें कोचिंग देते रहे हैं । वे ऑफिसियल हैं– तीजराम पटेल, चिंतामणी चक्रधारी, राजू सागर। यह महाविद्यालय इनको सम्मान देता है । ☐☐☐

रामप्यारी राठिया
अंतर्विश्वविद्यालय स्तरीय
खो–खो खिलाड़ी

राजू सागर
कोच

तीजराम पटैल
कोच

चिंतामणी चक्रधारी
कोच

मनोज सिन्हा
जिला स्तरीय
एथलीट (चैम्पियन)

छात्र पदाधिकारी फोटो परिचय

ज्योति सिंह
अध्यक्ष

भरत डेंजारे
उपाध्यक्ष

मनीष रावलानी
सचिव

दुर्गा प्रसाद यादव
सह–सचिव

टिकेश डनसेना
B.A. I

भावेश वैष्णव
B.A. II

लक्ष्य यादव
B.A. III

पुष्पा डनसेना
B.Sc. I

शबनम बानो
B.Sc.II

संगीता भगत
B.Sc. III

आकाश सिदार
B.Com. I

नेहा मेहरा
B.Com. II

निखिल गवेल
B.Com. III

आवेश गोयल
M. Com. Prev.

श्रवण बंजारे
M. Com. Final

दीपा रेलवानी
M.A. Prev. (Hindi)

देवलता कुर्रे
M.A. Final (Hindi)

माजिद अली
M.A. Prev. (Socio.)

कक्षा प्रतिनिधि
M.A. Final (Socio.)

कक्षा प्रतिनिधि
M.A. Prev. (History)

कक्षा प्रतिनिधि
M.A. Final (History)

रागिनी महंत
M.A. Prev. (Eco.)

नीलम डनसेना
M.A. Final (Eco.)

राधिका महंत
M. A. Prev.(Poli.)

गजानंद प्र. माली
M.A . Final (Poli.)

राजकुमार गबेल
छात्र पत्रकार

संतोष मिश्रा
छात्र पत्रकार

लवकुश राठिया
गायक

पूर्णिमा कंवर
नृत्यांगना

कविता गहीर
स्वर कोकिला

संगीता राठिया
खिलाड़ी

अधिकारी/कर्मचारी परिचय

क्र.	अधिकारी / कर्मचारी का नाम		पद व विभाग
1.	डॉ. पी.सी. घृतलहरे	-	प्राचार्य
2.	प्रो. एम. एल. धिरही	-	विभागाध्यक्ष, इतिहास
3.	डॉ. पी. एल. पटेल	-	विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान
4.	डॉ. अर्चना सिंह	-	विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी
5.	डॉ. रविन्द्र चौबे	-	विभागाध्यक्ष, हिन्दी
6.	डॉ. सुशीला गोयल	-	विभागाध्यक्ष, समाज शास्त्र
7.	डॉ. दिलीप अम्ब्रेला	-	सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
8.	प्रो. सरला जोगी	-	विभागाध्यक्ष, प्राणी विज्ञान
9.	डॉ. रमेश टण्डन	-	सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
10.	प्रो. मनोज साहू	-	विभागाध्यक्ष, वाणिज्य
11.	प्रो. काश्मीर एक्का	-	विभागाध्यक्ष, भौतिकी
12.	प्रो. अश्वनी पटेल	-	विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान
13.	प्रो. रचिता अग्रवाल	-	अतिथि प्राध्यापक, वाणिज्य
14.	प्रो. लोकेश शर्मा	-	अतिथि प्राध्यापक, रसायन
15.	प्रो. अजय अग्रवाल	-	अतिथि प्राध्यापक, गणित
16.	प्रो. सुचिलग्ना त्रिपाठी	-	अतिथि प्राध्यापक, अंग्रेजी
17.	डॉ. तृप्ति शुक्ला	-	अतिथि प्राध्यापक, राजनीति
18.	प्रो. बी. एल. कुर्रे	-	अतिथि प्राध्यापक, अर्थशास्त्र
19.	श्री यू. एस. टोण्डे	-	सहायक ग्रेड 2
20.	श्री संजय गुप्ता	-	सहायक ग्रेड 3
21.	श्री आर. के. साहू	-	सहायक ग्रेड 3
22.	श्री एस. के. मेहरा	-	प्रयोगशाला तकनीशियन (रसायन)
23.	श्री गोपेश पाण्डेय	-	प्रयोगशाला तकनीशियन (भूगोल)
24.	श्री डी. के. नागरे	-	प्रयोगशाला तकनीशियन (वनस्पति)
25.	श्री एल. एस. पोर्ते	-	प्रयोगशाला तकनीशियन (भौतिकी)
26.	श्री मदन मल्होत्रा	-	डाटा एण्ट्री ऑपरेटर
27.	श्री जी. डी. महंत	-	भृत्य
28.	श्री प्रेमसाय	-	भृत्य
29.	श्री एल. के. सिदार	-	प्रयोगशाला परिचारक
30.	श्री बसंत राम	-	प्रयोगशाला परिचारक
31.	श्री अरूण यादव	-	बुक लिफ्टर
32.	श्री लखन भारती	-	चौकीदार
33.	श्री शिवकुमार	-	चौकीदार, सायकल स्टैण्ड
34.	श्री रूद्र कुमार	-	ज.भा.स. कर्मचारी
35.	श्री शौकीलाल	-	ज.भा.स. कर्मचारी

शैक्षणिक भौगोलिक पर्यटन दमउधारा में छात्र-छात्राएं

एन.एस.एस. कैम्प फूलबंधिया में मंचस्थ अतिथि

एन.सी.सी. दिवस के दौरान कैडेट्स

जिला स्तरीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता खरसिया 2014

जिला स्तरीय खो-खो के विजेता टीम खरसिया

जिला युवा उत्सव में नृत्य प्रस्तुति के बाद छात्राएं

छात्र संघ पदाधिकारी शपथ लेते हुए

एन.एस.एस. कैम्प बरभौना में मंचस्थ अतिथि

एन.सी.सी. दिवस के दौरान कैडेट्स प्रोफेसर्स के साथ

राज्य स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता रायपुर 2014

मतदाता जागरूकता अभियान में छात्र-छात्राएं

ग्रीन कैम्पस – क्लीन कैम्पस बनाते हुए

Printed By : Samooh Offset, Kharsia